Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 06 30 जून, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

भारत की बेटियां, उनका खेल और राजनीति

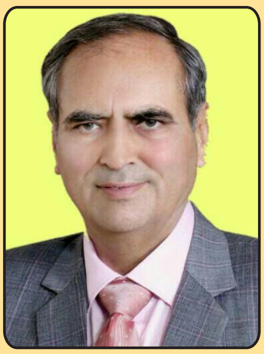

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

महीनों के संघर्ष, आंसू और जज्बे की वजह से अंतत कुश्ती संघ के अध्यक्ष और बाहुबली बृजभूषण शरण के खिलाफ दिल्ली पुलिस ने चार्जशीट दाखिल कर दी है लेकिन सवाल अब भी वहीं के वहीं हैं कि क्या देश का सिस्टम देश की उन बेटियों को इंसाफ दिला पाएगा जिन्होंने लाखों करोड़ों बेटियों को ये सिखाया है कि वो अपने सपनों को पूरा कर सकती हैं ? महिला खिलाडियों ने अपने लम्बे संघर्ष से चार्जशीट दाखिल करने पर तो दिल्ली पुलिस को मजबूर किया है लेकिन इस पूरी कवायद में अगर किसी पर सबसे ज्यादा उंगलियां उठी हैं तो वो दिल्ली पुलिस ही है?

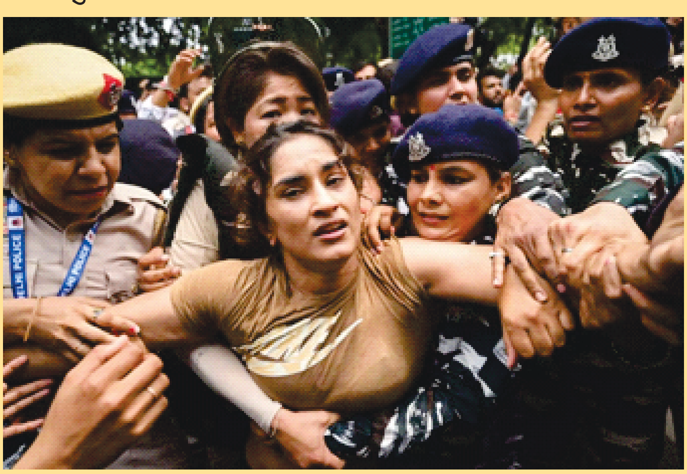

उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि पुलिस ने मानव अधिकारों के उल्लंघन और महिलाओं के प्रति दुर्व्यवहार व बर्बता की सारी सीमाएं लांघ दी। महिला खिलाडियों का कहना था कि कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण सिंह ने खिलाडियों का शोषण किया है और उनकी गिरफ्तारी होनी चाहिए। आम मामलों में अगर कोई साधारण महिला भी पुलिस में इसकी शिकायत देती है तो एफआईआर के बाद तुरंत आरोपित को गिरफ्तार किया जाता लेकिन चूंकि बृजभूषण सिंह भाजपा के सांसद हैं तो नियम अलग हो जाते हैं। असल में होना तो ये चाहिए था कि जिन बेटियों ने देश को गौरव के पल दिए हैं उनको तुरंत न्याय मिलता। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि कठिन मेहनत से पसीना बहा कर पदक जीतकर राष्ट्र का सम्मान बढ़ाने वाली महिला पहलवानों को सड़क पर घसीटा जा रहा है और दबंग आरोपी के दबाव से पुलिस द्वारा वाजिब कार्यवाही करने की बजाय आंदोलन को बलपूर्वक दबाया जा रहा है जबकि महिला खिलाड़ियों के सम्मान व न्याय के लिए तुरंत निष्पक्ष कार्यवाही होनी चाहिए थी।

भारत की गौरवशाली महिला खिलाडियों ने कुश्ती संघ पर जो आरोप लगाए गए हैं वो काफी गंभीर आरोप हैं। जिसमें लड़कियों के साथ यौन हिंसा, उनके वजीफे के पैसे, उनकी आर्थिक मदद के पैसे उन्हें नहीं दिए जाने और खिलाड़ियों के साथ मारपीट करने जैसे मामले काफी गंभीर हैं। सात महिला खिलाड़ियों के साथ आरोपी द्वारा की गई सारी हरकतों व अन्य भद्दे इशारों आदि का टीवी चौनल के माध्यम से भी खुलासा किया गया और जांच अधिकारी के सम्मुख सीन ऑफ क्राइम भी दोहराया गया है जो कि खिलाड़ियों की इज्जत का भी जनाजा है लेकिन पुलिस कार्यवाही फिर भी लगभग शून्य है क्योंकि पोक्सो एक्ट में तुरंत आरोपी की गिरफ्तारी के साथ अपराधिक मुकदमा दर्ज होना चाहिए था। अव्यस्क महिला पहलवान द्वारा मजिस्ट्रेट के सामने आरोपी के विरुद्ध सीआरपीसी की धारा 164 के तहत बयान दर्ज कराने के बावजूद कार्यवाही ना होना और धरने स्थल से जबरदस्ती उठाकर पीड़ित लड़कियों व अन्य पहलवानों के विरुद्ध मुकदमे दर्ज करना पुलिस व सरकार की नाकामी व मजबूरी को स्पष्ट करता है जिससे जनता में यही संदेश जाता है कि पुलिस व प्रशासनिक व्यवस्था 'कानून के शासन' की बजाए 'जंगल राज' के अधीन काम कर रही है। आज खेल संघों में जिस तरह का वातावरण है वो काफी चिंताजनक है। वहां पर कोई यौन हिंसा विरोधी कमेटियां नहीं बनाई गई हैं। बहुत सी महिला खिलाड़ी परिवारिक स्थिति व भविष्य की चिंता में खेल प्रबंधकों व प्रशिक्षकों की मनमानी व जुल्म सहने को मजबूर होती है। इसका यह भी कारण है कि हमारे देश व समाज में काफी परिवारों को यह ज्ञान नहीं है कि यौन शोषण क्या है जिस कारण काफी महिला खिलाड़ी उत्पीड़न के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज नहीं करा पाती। महिला पहलवानों के इस केस में भी आरंभ में 14–15 लड़कियों ने शुरू में गठित कमेटी के सामने बृजभूषण के खिलाफ शिकायत दी थी लेकिन पुलिस में शिकायत के समय केवल 7 महिला पहलवानों ने रिपोर्ट दर्ज करवाई।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

महिला खिलाडियों के आरोपों की जांच के लिए जो कमेटी बनाई गई है, हैरानी की बात तो ये है कि इस कमेटी का रेफरेंस किसी को पता नहीं है। कमेटी में जो चेहरे हैं उनमें कोई भी जेंडर के मुद्दे पर काम करने वाले चेहरे और मानवाधिकारों पर काम करने वाले लोग शामिल नहीं हैं। जहां तक महिला खिलाड़ियों का सवाल है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण तो हरियाणा ही है। हरियाणा जिसे खेल का हब कहा जाता है, वहां के खेल मंत्री पर एक जानी मानी एथलीट ने गंभीर यौन शोषण के आरोप लगाए हैं, लेकिन सरकार पूरे मामले पर लीपापोती कर रही है। आरोपों की जांच के लिए बनी समिति की अध्यक्ष ही इलेक्टिड ना होना अपने आप में खुद बहुत सारे सवालों को खडा करता है। महिला खिलाडियों के आरोपों की जांच करते हुए दिल्ली पुलिस ने पोस्को एक्ट को ही हटा दिया है और परिजनों तथा अव्यस्क महिला खिलाड़ी पर दबाव बनाकर उसके बयान भी बदलवा दिए। जिस तरीके से दबाव और दबंगई दिखाई जा रही है उसको देखते हुए तो जिन खिलाडियों तथा अन्य लोगों ने इस अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का हौसला दिखाया है उनकी आवाज को भी दबाया जाएगा, इसमें कोई शक दिखाई नहीं देता है। बृजभूषण सिंह टीवी पर कहते हैं कि अगर मैं दोषी हूं तो मुझे फांसी पर लटकाया जाए लेकिन सवाल तो यही है कि समर्थ को दोषी बताए कौन? वो पुलिस जिसने चार्जशीट करने में ही महीनों लगा दिए या वो सिस्टम जो महिला खिलाडियों पर ही अंगुली उठा रहा है। बृजभूषण सिंह के इस प्रकार से गुरुर भरे दावे से तो यही लगता है कि वह अपने प्रभाव व रुतबे के दम पर पुलिस व प्रशासनिक व्यवस्था को ललकार रहा है। देश की जिन संस्थाओं को महिला खिलाडियों के साथ खडा दिखाई देना चाहिए था वो मानव अधिकार आयोग और महिला आयोग इस कदर सोए पडे हैं जैसे कुंभकर्ण अपनी नींद ले रहा हो।

मेरा ये सौभाग्य रहा है कि मैं खुद कुश्ती संघ का पांच वर्ष (2001 से 2005) अध्यक्ष रहा हूं और मेरे कार्यकाल के दौरान में ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें त्वरित कार्रवाई और न्याय की उम्मीद की गई और उस उम्मीद को पूरा किया गया, जिससे महिला खिलाडियों का हौसला बढा और असामाजिक तत्वों के हौसले टूटे। खेल जगत, सिविल प्रशासन तथा पुलिस के अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई। इससे पूर्व भी खेल संघों के उच्च अधिकारियों व प्रशिक्षकों द्वारा महिला खिलाड़ियों के विरुद्ध यौन उत्पीड़न व दुर्व्यवहार के मामले उजागर हुए हैं और उनमें आरोपी के विरुद्ध कार्यवाही की जाती रही। वर्ष 1998 में भारतीय हॉकी टीम के प्रबंधक एम. के. कौशिक को महिला खिलाड़ी से छेड़छाड़ करने पर पद से हटाया गया। अमेरिकन जिमनास्टिक टीम के डॉक्टर लहरी नासर को महिला खिलाड़ी के साथ यौन उत्पीड़न केस में जेल काटनी पड़ी। वर्ष 1990 में हरियाणा के एक पूर्व डीजीपी को महिला टेनिस खिलाड़ी के साथ छेड़छाड़ करने के केस में पद से हटाया गया और उसको जेल भी हुई। 2018 में चीन की मशहूर टेनिस स्टार हुई द्वारा चीन के पूर्व वाइस प्रीमीयर झांग ग्योली पर यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए गए। जनता के सामने की गई मन की बात में भी महिला खिलाड़ियों के संघर्ष का जिक्र तक नहीं किया जबकि दर्ज एफआईआर के अनुसार महिला खिलाड़ियों ने आरोपी द्वारा की गई सारी जयादतियों, यौन उत्पीड़न, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक छेड़खानी व भद्दे इशारे आदि की जानकारी से प्रधानमंत्री जी को अवगत करा दिया था और उन्होंने आश्वासन दिया था कि खेल मंत्री द्वारा उनकी सभी शिकायतों की उचित छानबीन की जाएगी।

बृजभूषण भ्रष्ट सिस्टम का पुराना माहिर है, कोर्ट, कचहरी और थाने उसके लिए नए नहीं है। 33 केस का रिकॉर्ड उनके नाम दर्ज है। 2 एफ.आई.आर. में यौन उत्पीड़न के 10 केस नामांकित है खेल जगत में बृजभूषण का पूरा दबदबा है और वर्तमान में उसके छह परिजन व रिश्तेदार विभिन्न खेल संघों के अध्यक्ष हैं। उनका इतिहास एक बाहुबली के तौर पर रहा है और सरकार खुद उस अध्यक्ष के साथ जूझ रही है। सरकार ने इस तरह के पदों पर ऐसे लोगों को बिठाया है, ये न्याय प्रक्रिया को अवरुद्ध करने वाले लोग हैं और साथ ही इन्होंने खेल के वातावरण को भी खराब किया है। सरकार को अब खुद इस चीज का एहसास हो रहा है कि ये अब उनकी भी नहीं सुन रहे हैं। वो कह रहे हैं कि मुझे लोगों ने चुना है और मैं किसी की दया से नहीं बना हूं। ये सभी को पता है कि अध्यक्ष को जनता नहीं बल्कि राज्यों की एसोसिएशन चुनती हैं। सरकार के पास अधिकार है कि वो उन्हें इस पद से हटा सकती है।

आज जिन खिलाड़ियों ने जो ये आवाज उठाई है, उन्होंने अपना करियर दांव पर लगाकर आवाज उठाई है।

हालांकि अभी जो ढीला रवैया चल रहा है उससे परिवारों की चिंता बढ़ रही है। हम हरियाणा के गांवों में देख रहे हैं कि लोगों में काफी आक्रोश है, लोग पूछ रहे हैं कि सरकार अध्यक्ष को हटा क्यों नहीं रही है। 1983 विश्व कप के विजेता क्रिकेटर स्टारों सहित विभिन्न खाप पंचायतों, समाजिक संगठनों, कर्मचारी संघों, किसान संगठनों आदि द्वारा आरोपी राजनीतिज्ञ के विरुद्ध कार्यवाही की पुरजोर मांग उठाई जा रही है। छह बार के निरंतर ओलंपिक शिवा केसावन ने आक्रोश जताते हुए कहा है कि खिलाड़ियों के हितों व न्याय के संदर्भ में यह घृणित कृत्य हमारे खेल इतिहास में सबसे काला दिवस माना जाएगा। महिला खिलाड़ियों का संघर्ष सरकार की बेरुखी से लंबा खींचने के कारण सरकार की दबाव नीति का असर कामयाब हो रहा है और संघर्षरत खिलाड़ी भी परस्पर एक–दूसरे पर आरोप लगाने लगे हैं।

आमतौर पर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं या अंतरराष्ट्रीय शतक की चयन प्रतियोगिताओं में पहलवान के साथ प्रशिक्षक के अतिरिक्त उसके अभिभावक भी साथ जाते थे। कुछ समय से यह बैन कर दिया गया कि प्रशिक्षक के अलावा उसके अभिभावकों के अपने पुत्र या पुत्री की कुश्ती देखने के लिए अंदर जाने की अनुमति इसलिए नहीं देते कि वे वहां पर अनुशासनहीनता फैलाते हैं। ओलंपिक क्वालीफाई करने के लिए विश्व कुश्ती संघ द्वारा चयन प्रक्रिया का प्रावधान है। भारतीय कुश्ती संघ के नियम के अनुसार क्वालीफाई करने वाला पहलवान ही ओलंपिक में भेजा जाता है। जिसमें ज्यादातर हरियाणा के पहलवान होते थे। उनको रोकने के लिए अब भारतीय कुश्ती संघ ने यह प्रावधान कर दिया कि क्वालीफाईड खिलाडी को ओलंपिक में जाने से पहले दूसरे पहलवान से ट्रायल देनी होगी। इस प्रक्रिया द्वारा प्रधान अपने पद के प्रभाव का उपयोग करके अपने चहेतों को आगे भेजने का जुगाड़ कर लेता है। खिलाड़ियों के आंदोलन का यह भी मुख्य कारण है। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 30 में से 16 राष्ट्रीय खेल संघों द्वारा यौन उत्पीड़न रोकथाम एक्ट द्वारा पारित प्रावधानों का पालन नहीं किया जाता है जिससे महिला खिलाड़ियों को मानसिक व शारीरिक तनाव झेलना पड़ता है। यह भी देखा गया कि मीटिंग द्वारा भी पुरुष खेल स्पर्धाओं की अपेक्षा महिला मुकाबलों की कवरेज कम की जाती है जिससे उनकी खेला क्षमता प्रभावित होती है।

कुश्ती, हॉकी और बॉक्सिंग में जो भी लड़कियां खेलने जाती हैं, उनके मां–बाप उन्हें लेने और छोड़ने जाते हैं। इसके अलावा उनके साथ वहां मौजूद रहते हैं और इस तरह परिवार पर लगातार बोझ बढ़ता है। इसके लिए व्यवस्था करने की जरूरत है। पूरे खेल जगत को महिलाओं की दृष्टि से सुरक्षित बनाने के लिए और आम खिलाड़ियों के परिवारों की नजर में जिम्मेदार संस्था के लिए अलग–अलग स्तर पर काम करना होगा। इस पर सरकार को, समाज को, अभिभावकों को भी और समाजिक संगठनों को भी काम करने की जरूरत है।

देश की संस्थाओ की चुप्पी जहां इस मामले में अखरती है वहीं इंटरनेशनल ओलंपिक संघ ने सरकार और कुश्ती संघ की मंशा पर सवाल उठाते हुए जिम्मेदारी निभाई है लेकिन न्याय तो देश के सिस्टम को करना है। महिला खिलाडियों को देश के किसानों, कर्मचारियों, महिलाओं और बुद्धिजीवी वर्ग के मिले समर्थन को देखकर जनभावनाओं को तो समझा जा सकता है लेकिन केंद्र सरकार और दिल्ली पुलिस दोनों ही इन जनभावनाओं के खिलाफ काम कर रही है। कुल मिलाकर ये कहा जा सकता है कि खेल जगत के इतिहास में विश्व स्तर पर महिला खिलाडियों के प्रति हिंसा, प्रताडना, यौन शोषण तथा आपराधिक कार्यवाही का नया इतिहास इस देश में बन रहा है। केन्द्रीय सरकार की खामोशी और महिला खिलाडियो की चित्कारें इस देश और देश के खिलाडियों को क्या दिशा देगी ये तो वक्त बताएगा लेकिन निश्चित ही ये देश की बेटियों के हौसले को तोडकर रख देगा, इसमें किसी को शक नहीं होना चाहिए। खिलाड़ी का व देश की सुरक्षा में लगे जवान का एक विशेष दर्जा होता है जिनकी कोई जाति, वर्ग नहीं होता। उनके कारनामे व जिंदगी सदैव राष्ट्र के सम्मान तथा गौरव से जुड़ी होती है। जिसके सम्मान की रक्षा करना व न्याय दिलाना सरकार के लिए सर्वोपरि होता है। अतः पुलिस व सरकार द्वारा किसी दबाव या स्वार्थ के बिना महिला खिलाड़ियों को न्याय दिलाने की न्याय संगत कार्यवाही करना वक्त की अत्यंत जरूरत है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

संत कबीर दास जी

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

कबीर दास जी एक महान समाज सुधारक कवि एवं संत थे। उनका जन्म 14वींसदी के अंत में 1398 ईसवीं में कांशी में हुआ था। उस समय मध्यकालीन भारत पर सैयद साम्राज्य का शासन हुआ करता था। इनके पिता जी का नाम निरू माता का नाम नीमा था। उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी की कोख से हुआ था, जो कि लोकलाज के भय से इस नवजात को त्यागने का निश्चय कर लिया और एक टोकरी में रखकर लहरताश तालाब के किनारे छोड़ दिया। उसी तालाब के पास नीरू और नीमा नाम के एक जुलाहा दंपत्ति रहा करते थे। वे निःसंतान थे। बच्चे की रोने की आवाज सुनकर दोनों तालाब की तरफ आए। उन्होंने देखा की टोकरी के अंदर एक नवजात बच्चा रो रहा है। उस बच्चे को वह दोनों घर ले आए और भगवान का दिया हुआ कुलदीपक समझ कर अपना पुत्र मान लिया और उसका पालन–पोषण बड़े चाव से किया। ऐसा कहा जाता है कि नीरू और नीमा दोनों मुस्लिम समुदाय से थे और वे जुलाहा का कार्य करते थे। कहते है जब नीमा ने कबीर को टोकरी से उठाकर अपनी छाती से लगाया तो नीमा के स्तनों में दुध आ गया था। ये एक भगवान की ही लीला थी।

कबीरदास जी भक्ति काल के कवि थे, जिन्होंने युवा होते ही वैराग्य धारण कर लिया और निराकार ब्राह्मण की उपासना के उपदेश दिए। कबीरदास का समय कवि रहीमव सूरदास के समय से पहले का है। संत कबीर दास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों को दूर किया। जिसकी वजह से उन्हें समाज सुधारक भी कहा जाने लगा। उन्होंने धर्म व जातिवाद से ऊपर उठकर नीति की बातें बताई, जिसकी वजह से हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के लोगों ने उनकी प्रारंभ में आलोचना की, परंतु जब कबीर का देहांत हुआ। तब हिंदू व मुस्लिम लोगों ने उनको अपने–अपने धर्म का संत माना।

कबीरदास जी अनपढ़ थे, उन्होंने जो कुछ सीखा अपने अनुभव से ही सीखा था। सतगुरु रामानंद की कृपा से उन्होंने आत्मज्ञान व प्रभुभक्ति का वास्तविक अर्थ समझ में आया। जब उन्होंने कांशी में गुरु रामानंद जी का पता चला तो वे उनके पास दोड़े गए और रामानंद जी को अपना गुरु मान लिया। जो कुछ शिक्षा दीक्षा ली, वो सभी गुरु रामानंद से ही ली। गुरु रामानंद जी उस समय के एक महान हिंदू संत थे। गुरु रामानंद कांशी में रहकर अपने शिष्यों को व अन्य भक्तजनों को भगवान विष्णु में आशक्ति के उपदेश दिया करते थे। उनके उपदेशों में उन्होंने लोगों को बताया कि भगवान हर इंसान में विद्यमान है, हर चीज में हैं। गुरु रामानंद के शिष्य बनने के बाद संत कबीर जी उनके ही उपदेशों को सुनने लगे और उनके उपदेशों के अनुसार मन चिंतन ध्यान करते रहे। उसके बाद धीरे–धीरे हिंदू धर्म के वैष्णव की ओर अग्रसर होते गये। उन्होंने वैष्णाव के साथ–साथ सूफी धारा को भी जाना। इतिहासकारों के अनुसार संत कबीर गुरु रामानंद के यहां ज्ञान प्राप्त करने के बाद संत बन गए और श्री राम को अपना भगवान माना।

1. एकांत प्रियः– संत कबीर दास जी बचपन से ही एकांतप्रिय इंसान थे।वे एकांत में रहकर ही भक्ति चिंतन करते रहते थे। भगवान की भक्ति में लीन रहते थे। एकांत प्रिय स्वभाव के कारण उनकी बुद्धिमता का बहुत ज्यादा विकास हुआ। कुछ इतिहासकारों का मत है कि संत कबीर दास जी आजीवन अविवाहित रहे।

2. चिंतनशील रहनाः– वे एक चिंतनशील इंसान थे। उनका अधिकांश समय काव्य रचना व उनके सोच विचार पर ही जाता था। वह समाज में व्याप्त बुराइयों पर अच्छी तरह चिंतन करके कटु काव्य खंडों की रचना करते ताकि वे उन बुराइयों को समाज से खत्म कर सके। संत कबीर दास जी ने समाज में पूजा–पाठ आदि की फैली बुराइयों का घोर खंडन किया, चाहे हिंदू समाज में हो, चाहे मुस्लिम समाज में हो।वे पूजा पाठ के बिलकुल खिलाफ थे। संत जी ने समाज में फैली बुराइयों का खंडन अपने तरीके से काव्य रचना और दोहे आदि लिखकर किया, जैसे उन्होंने कुछ दोहे समाजिक बुराइयों को दूर करने के हेतु लिखें :–

1. कंकर पत्थर जोड़कर मस्जिद लई बनाय।
   तां चंढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाया।।
2. पाहन पुजें हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़।
   घर की चक्की कोई ना पूजै, जिही का पीसा खाय।।
3. माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
   करका मनका डार दे, मनका मनका फेर।।
4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
   ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।
5. शब्द विचारी जो चले, गुरमुख होय निहाल।
   काम क्रोध व्यापै नहीं, कबहूँ न ग्रासै काल।।

6. मांगन मरण समान है, मत कोए मांगो भीख।
मांगन तै मरना भला, यह सतगुरु की सीख।।

7. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।।

8. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

इस तरह से काव्य रचनाओं द्वारा समाज की बुराइयों को दूर करने का संत जी ने भयंकर प्रयास किया। अनेकों प्रकार की रचनाएं करके संत कबीर जी ने समाज में फैली अनेक बुराइयों को दूर करने का भरसक प्रयास किया।

3. साधु सेवाः– संत कबीर दास जी ने गुरु को सबसे बड़ा बताया। उन्होंने गुरु को ही अपना सगा संबंधी माना। वे हमेशा गुरु के ही सम्मान और सेवा में न्यौछावर रहे। संत जी ने निराकार ब्राह्मण को मान करके सांसारिक जीवन से सार्थकता पाने पर विश्वास जताया। निराकार ब्राह्मण की आराधना से वह साधु की प्रवृत्ति में बदल गए। उन्होंने मूर्ति पूजा व फालतू के आड़म्बरों को नकारते हुए कहा कि हम सभी एक ही ईश्वर की संतान है। उन्होंने कहा कि सभी इंसान चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाला हो, एक ही ईश्वर की संतान है। उन्होंने सभी प्रकार के पाखंडों व आडम्बरों की घोर निन्दा की। ईश्वर की प्राप्ति हेतु अलग–अलग धर्मों में अपनाए जाने वाले तौर तरीके का नकारा। उन्होंने वैष्णव व सूफीवाद को माना। उनके गुरु रामानंद जी के अनुसार भगवान हर व्यक्ति में विद्यमान है, हर चीज में है और उनमें कोई भी विभेद नहीं है।

कबीर दास जी ने माना कि सभी इंसान चाहे किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं वह सभी एक समान है। उन्होंने कहा कि ईश्वर की प्राप्ति हेतु अलग–अलग धर्मों में अपनाए जाने वाले तौर–तरीकों को नकारा। उन्होंने समाज में फैली व्यापक रूप से ऊंच–नीच, छुआछात, जातिगत भेदभाव, धार्मिक भेदभाव को कुचलने के लिए बहुत सारी रचनाएं लिखी है।

संत कबीर दास जी की रचनाओं का मुख्य संकलन को बीजक कहा जाता है इसके 3 भाग है।

1. साखी, 2. सबद, 3. रमैनी

संत कबीर दास जी ने समाज सुधार के लिए जो कार्य किए, उन कार्यों का संकलन उनके शिष्य धर्मदास जी ने किया। संत जी ने 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के मूल्यों को स्थापित किया। अपनी रचनाओं में उन्होंने स्पष्ट व सरल भाषा का प्रयोग किया और नश्वरता, अहंकार, आडंबरो, नैतिक जीवन मूल्यों, सत्संगति, सदाबहार इत्यादि पर खुलकर लिखा। हालांकि संत जी अनपढ़ थे लेकिन उनका शिष्य पढ़ना–लिखना जानता था उसकी मदद से लिखवाते थे। संत काव्य परंपरा में उनके द्वारा रचित रचनाएं हिंदी साहित्य के लिए एक अमूल्य धरोहर है। इतिहासकारों के अनुसार जब कबीर दास जी की मृत्यु 1518 ईस्वी में 120 वर्ष की आयु में हुई। वर्तमान उत्तर प्रदेश के मघहर नगर में तो हिंदू और मुस्लिम दोनों समाज के लोग उनकी अर्थी उठाने के लिए आ गए, क्योंकि दोनों धर्मों के लोग उनको अपना मानते थे और उस समय धार्मिक विवाद गहरा गया था। उसके बाद अंत में यह निर्णय लिया गया कि दोनों धर्मों के लोग संत जी के शरीर को आधा–आधा बांट कर अपने–अपने धर्म के अनुसार अंतिम संस्कार करेंगे।

इस निर्णय के बाद जब संत जी के मृत शरीर से चादर उठाई गई तब उनके मृतक शरीर की जगह बहुत सारे फूल पाए गए। इस तरह के अलौकिक अद्‌भुत .श्य को देखकर सभी लोगों ने माना कि संत जी स्वर्ग सिधार गए हैं। आखिरकार दोनों धर्मों के लोगों ने उन फूलों को आधे–आधे विसर्जित करके संत जी का अंतिम संस्कार किया। संत कबीर दास जी के नाम पर उत्तर प्रदेश में एक जिले का नाम है। संत जी अपने समय के एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने अनेक रचनाओं के द्वारा सामाजिक बुराइयों को खत्म करने का समाज को संदेश दिया।

चौधरी लालचन्द फौगाट

– बी.एस. गिल,
सचिव, जाट सभा

चौधरी लालचन्द महाराज जमनादास के मध्यम पौत्र थे। आपका जन्म भालोट में 1882 के आसपास हुआ। आप शिक्षा प्राप्त करके नायब तहसीलदार बने। बाद में आप वकालत करने लगे। आप केवल कत्ल के केस लेते थे। बड़े प्रसिद्ध वकील थे। लोगों के लिए बड़े–बड़े मुडेव हुक्का–पानी रखते थे। अंग्रेज ने आपकी योग्यता देखते हुए आपको सम्मानित न्यायाधीश व सम्मानित कैप्टन को उपाधि दी थी। किसी भी मुकदमे के निर्णय को बदलने की शक्ति आपको दी गई थी। इसी प्रकार विशेष पदों पर भर्ती में आपकी सलाह ली जाती थी। आप सरकारी कामकाज में दखल नहीं देते थे लेकिन लोगों के कहने पर आपने अनेक युवाओं को उच्च पदों पर नियुक्त करवाया तथा अनेक व्यक्तियों को न्यायालय द्वारा दोषी करार दिए जाने पर भी अपनी मैजिस्ट्रेटी पावर से मुक्त कर देते थे लालचन्द्र चौ. छोटूराम ओभानी गंगाराम श्री बलदेव सिंह

हुमायूंपुर, लाहौर में साथ ही पढ़ते थे। चौ. छोटूराम प्लेग की बिमारी में वापिस आ गए थे तथा कुछ दिन बाद कालाकांकर नरेश के यहां जाकर नौकरी करने लगे। इसी समय आगरा से वकालत करके आगरा में ही वकालत करने लगे लेकिन उनका वकालत का काम वहां जमा नहीं। चौ. लालचन्द ने चौ. छोटूराम को रोहतक बुला लिया। यहां दोनों मिलकर वकालत करने लगे। आप अब माल नम्बरदारी, जैलदारी, सफेद पोशी व भूमि विवाद व राजस्व के केस लेने लगे तथा चौ. छोटूराम दीवानी व फौजदारी का सारा काम करते थे। 1913 से 1921 तक आपने साझे में वकालत की। आय भी आधी आधी बांट लेते थे। किसान व जाट विरोधी लोगों ने अनेक बार दोनों में फूट डालनी चाही। वे कहते थे कि चौ. छोटूराम काम तो आप ज्यादा करते हो, फिर भी आधी आय चौ. लालचन्द ले जाते हैं। चौ. लालचन्द पंजाब कौंसिल के मेम्बर है तथा अम्बाला कमिश्नरी के रैंगरूटिंग अफसर की उनकी आमदनी है। उसमें ये आपको कुछ नहीं देते, लेकिन चौ. छोटूराम को चौ. लालचन्द अधिक पैसा देने तब भी वे नहीं लेते थे। चौ.छोटूराम चौ. लालचन्द पर भारी श्रद्धा रखते थे। वे उनके कानूनी ज्ञान से प्रभावित थे। वे समझते थे चौ. लालचन्द की तरक्की तमाम जाटों की इज्जत है। यदि हमारी जोड़ी बिगड़ती है तो जाट कौम का दबदबा नहीं रहेगा। किसानों में निराशा आ जाएगी। इसीलिए चौ. छोटूराम, चौ. लालचन्द में पूरी तरह मिलकर चलते थे। चौ. लालचन्द का रसूख बड़े–बड़े लोगों में था। चौ. छोटूराम आम लोगों के दिलों में बैठे थे। दोनों की छवि से शासन प्रशासन में उनकी धाक थी।

किसानों की कर्जा माफी व भूमि वापसी

जब पंजाब विधानसभा में किसान कर्जा माफी बिल तथा भूमि वापसी बिल पारित होने पर भी राज्यपाल ने उसे स्वीकृत नहीं किया तो चौ. लालचन्द वायसराय सलाहकार समिति की बैठक में बतौर सदस्य गए तब बैठक के बाद ये वायसराय से मिले। उन्होंने कर्जा माफी व भूमि वापसी बिल पर राज्यपाल द्वारा हस्ताक्षर न करने की बात रखी और कहा कि 100–100 रुपये के ऋण पर बार– बार झूठे अंगूठे लगवाकर अनपढ़ किसानों की धरती व घर कुड़क कर लिए है। इन्हें वापिस घर जमीन देना व ऋण माफी करना बहुत जरूरी है। इससे सरकार की साख भी बहुत बढ़ जाएगी। वायसराय ने राज्यपाल को बुलाकर बिल पर हस्ताद्वार करवाये। चौ.लालचन्द ने चौ. छोटूराम को बताया कि बिल पर राज्यपाल के हस्ताक्षर हो गए हैं। आप कर्जा माफी व भूमि वापसी की घोषणा के लिए रोहतक आ जाओ। हजारों हिन्दू मुसलमान किसानों के साथ बैंडबाजे व हाथी के साथ चौ.लालचन्द, चौ.छोटूराम को लेने स्टेशन पर पहुंचे। जुलूस में चौ. छोटूराम को हाथी पर बैठाया गया। रास्ते में कुछ व्यापारियों ने काले झंडे भी दिखाए लेकिन चौ. छोटूराम ने कहा कि इसमें व्यापारियों का भी लाभ है तथा आगे और भी त बढ़ेगा। जुलूस चौ. छोटूराम की नीली कोठी तक आया वहां सभी ने बिल केहक में बातें रखी। चौ. लालचन्द खुद नहीं बोले कहा कि चौ. छोटूराम ही सब बात बता देंगे। चौ. छोटूराम सबके बाद बोले तथा सभी बातों की लाभ–हानि समझाई।

यूनियनिस्ट पार्टी बनवाई

श्री छोटूराम के कांग्रेस छोड़ने के बाद चौ. लालचन्द ने कहा कि आप जो कुछ भी किसानों के लिए करना चाहते हो वो कैसे करोगे ? राजनीति के बिना यह संभव नहीं। चौ. छोटूराम ने कहा– "किसान पार्टी" बनाई जाए। चौ. लालचन्द ने कहा कि पार्टी का नाम "यूनियनिस्ट पार्टी" रखो। तब पार्टी का नाम यूनियनिस्ट पार्टी रखा गया। चौ. लालचन्द पंजाब प्रांतीय जाट महासभा के प्रधान थे तथा महासचिव चौ. छोटूराम थे। जाट महासभा में जो भी जाट था भले ही वह हिन्दू मुसलमान या सिख हो सम्मिलित हो सकता था। इसलिए जाट महासभा के सभी हिन्दु सिख मुसलमानों का भी पूरा सहयोग "यूनियनिस्ट पार्टी" को मिला। संयुक्त पंजाब में इस पार्टी ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग को किनारे कर दिया तथा भारी बहुमत से जीतकर किसान हित में काम किए। पहली बार रोहतक/गोहाना से मातूराम को हरा कर लालचन्द जीत गए और कृषि मंत्री रहें लेकिन बहादुरगढ़/सोनीपत से चौ० छोटूराम हार गए और दूसरी बार लालचन्द ने मातुराम को हरा दिया और कृषि मन्त्री और छोटूराम जी भी जीत गए लेकिन लालचन्द के विरूद्ध मातूराम ने गलत वोट डाल कर पेटिशन दायर कर दी। जिसमें लालचन्द हार गए और चौ० छोटूराम कृषि मंत्री बने।

भाखड़ा बाँध के लिए भूमि दिलाने में सहयोग

चौ. छोटूराम ने भाखड़ा बांध की योजना बनाई तो लगभग 60 किलोमीटर भूमि की जरूरत पड़ी जो कि महाराजा विलासपुर के राज्य में लगती थी। महाराजा भूमि देने के लिए तैयार नहीं थे। इस अवसर पर चौ. लालचन्द ने महाराजा विलासपुर को किसानों के हित में यह भूमि देने के लिए तैयार करने में बड़ी भूमिका निभाई और महाराजा को भूमि देने के लिए मना लिया। जिससे बांध का काम आगे बढ़ पाया। भूमि अधिग्रहण की ऐसी बेमिसाल कवायद प्रारंभ की, जो कम ही देखने को मिलती है। नंगल व भाखड़ा गांव के लोगों को टोहाना के पास जमीन के बदले जमीन दी गई और नौकरी सहित मकान बनाने के लिए मुआवजा दिया गया।

जाट स्कूल में सहयोग

जाट एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल की स्थापना हुई एक बैठक में स्कूल का सम्बन्ध विश्वविद्यालय व सरकारी नियंत्रण से बाहर रखने का निश्चय कर लिया गया। बैठक में चौ.

छोटूराम व चौ. लालचन्द दोनों नहीं आ पाए थे। चौ. छोटूराम ने इलाके के समझदार लोगों को बुलाकर समझाया कि बिना सरकारी मान्यता के स्कूल से पढ़कर निकले युवाओं को नौकरी नहीं मिल सकती इसलिए विश्वविद्यालय की मान्यत रखना जरूरी है, लेकिन चौ. बलदेवसिंह ने यह बात नहीं मानी। सभी लोग चौ. बलदेवसिंह के त्याग व तप के कायल थे। इस अवस्था में चौ. लालचन्द के सहयोग से चौ. छोटूराम ने "जाट हीरोज हाईस्कूल" नाम से एक दूसरे स्कूल की स्थापना कर दी। चौ. लालचन्द इस स्कूल के उत्सवों पर थल सेनाध्यक्ष तथा भरतपुर नाभा, पटियाला आदि के राजाओं को बुलाकर सहयोग लेते थे। स्कूल में 700 के लगभग छात्र हो गए, जबकि पहले स्थापित स्कूल में 60–70 छात्र हो रह चौ. बलदेव सिंह ने अपने स्कूल को दूसरे स्कूल में ही मिला दिया। दोनों स्कूलों को मिलाकर नाम रखा गया– जाट हीरोज मैमोरियल एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल यह संस्था अनेक विभागों व महाविद्यालयों के रूप में विस्तशत होकर विश्वविद्याल के समान कई हजार छात्रों को शिक्षित कर रही है। चौ. लालचन्द ने रोहणा में क स्कूल भी स्थापित करवाया था।

ईमानदार, संतोषी, धैर्यवान व विवेकशील

चौ.लालचन्द बड़े गुणवान व्यक्ति थे। जहां आप संतोषी सरल स्वभाव के देवों बड़े ईमानदार धैर्यशील व विवेकी व्यक्ति थे। इस प्रकार की कई घटनाएं हैं जिससे व प्रकट होता है।

प्रथम घटनाः– तीसरी बार रोहतक हल्के से चौ. लालचन्द चुनाव के लिए खड़े हुए उधर खिड़वाली के चौ.रामस्वरूप भी चुनाव में खड़े हो गए। चौ. लालचन्द ने कहा– भाई जब मैं चुनाव में खड़ा हूँ तो आप बिना सलाह के ही खड़े हो गए तो आपने ठीक नहीं किया। आप पहले ही मुझे बता देते तो ठीक रहता। अब मैं चुनाव लड़ रहा हूँ। आप रहने दो। चौ. रामस्वरूप ने कहा– मैं तो जरूर चुनाव लडूंगा आप लड़े या ना लड़े। चौ. लालचन्द बोले– इतना जरूरी समझ रहे हो तो आप ही चुनाव लड़े। अपना नाम वापिस लेकर आपकी मदद करूंगा। आपने अपना नाम वापिस लेकर चौ. रामसरूप की मदद की। यह सूझबूझ भाईचारे व त्याग का उदाहरण है।

दूसरी घटनाः– चौ. लहरी सिंह लालचन्द के अनुयायी थे। उन्होंने डकैतों औरगुण्डागर्दी करने वाले लोगों को खत्म करने की योजना बना कर उन्हें खत्म करने का काम शुरू कर दिया। चौ. लालचन्द को पता लगा कि चौ. लहरीसिंह चौ. रामस्वरूप को भी निशाना बनाना चाहते हैं। आपने तुरंत चौ. रामस्वरूप को सावधान कर दिया तथा उन्हें पंजाब से बाहर गोपनीय स्थान पर भेज दिया तथा चौ. लहरीसिंह को भी समझा दिया कि अब इसके पीछे मत पड़ो। जिससे वे बच गए। चौ. रामसरूप हरिद्वार की 'पंजाब सिध धर्मशाला' में रहे तथा धर्मशाला से उन्होंने सरदारों का नाजायज कब्जा हटवाकर उसका ट्रस्ट बनवाया था। आज भी चौ. रामसरूप के परिवारजन उसके ट्रस्टी हैं। चौ.लालचन्द की अत्येष्टि पर चौ. रामसरूप ने बड़े भावुक होकर कहा था कि आज मेरा आदर्श व जीवन रक्षक चला गया।

तीसरी घटनाः– रोहतक के सेठ श्रीकिशनदास के पिता सेठ जगदीशराय ने – रोहतक में गोकर्ण तालाब पर 16 एकड़ जमीन खरीदी। यह जमीन सेठ जगदीशराय ने टैक्स से बचने के लिए किसान होने के कारण चौ. लालचन्द के नाम करवा दी। सेठ जगदीशराय के निधन के बाद जमीन के कागज सेठ जगदीशराय के पुत्र सेठ श्रीकिशन दास के नाम तैयार करवा दिए और उनके हस्ताक्षर भी कराने के लिए उनके घर पहुंच गए। सेठ श्रीकिशन बोले– यह आपने क्या किया? चौ. लालचन्द बोले– भाई! बच्चों का क्या भरोसा है? कल क्या करेंगे ? मैं अभी यह जमीन आपके नाम जरूर कराऊंगा। हस्ताक्षर करो। सेठ श्रीकिशनदास को न चाहते हुए भी हस्ताक्षर करने पड़े। इस प्रकार पराई जमीन वापिस कर चौ. लालचन्द निश्चित हो गए।

चौथी घटनाः– एक बार परिवारजनों ने चौ. लालचन्द से कहा कि आप चाचा हरद्वारी को तहसीलदार लगावा दो चौ. लालचन्द ने डीसी अंग्रेज से कहा तो वह बोला कि आप त्यागपत्र दे दो आपकी जगह लगा दूंगा। चौ. लालचन्द ने त्यागपत्र देकर चाचा हरद्वारी को तहसीलदार लगवा दिया। कहने पर भी त्याग पत्र वापिस नहीं लिया।

पंजाब सर्विस कमीशन की चेयरमैनी छोड़ी

चौ. छोटूराम ने चौ. लालचन्द को पंजाब सर्विस कमीशन का चेयरमैन बनवाया। चौ. लालचन्द ने देखा कि रिक्तियां कम होती हैं तथा सर्विस चाहने वाले अधिक है। न्यायपूर्ण ढंग से भी नियुक्तियां की जाती हैं तब भी लोग नाराज होते हैं। यह देख आपने सर्विस कमीशन चेयरमैन पद से ही त्याग पत्र दे दिया। फिर भी कोई व्यक्ति मदद चाहता तो उसकी मदद करते रहते थे।

पांचवीं घटनाः– हरियाणा के एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी ने अन्तिम समय चौ. लालचन्द के बारे में बात चलने पर कहा था कि चौ. लालचन्द बेहद ईमानदार व बुद्धिमान व्यक्ति थे। हमारी ही राजनैतिक भूख ने उनको बदनाम किया।

भरतपुर रियासत के राजस्व मंत्री

चौ. लालचन्द ने रोहतक गोहाना हल्के से चुनाव लड़ा और जीत गए और कृषि मन्त्री बने लेकिन दूसरी बार मुकाबले में हार चुके चौ.मातुराम ने न्यायालय में गलत वोट डालने का काम कर दिया। मुडलाना में मृत व्यक्ति की वोट डाली गई सिद्ध हो गई। इससे चुनाव रद्द कर दिया गया। शहर के गैर जाट वकील कहने लगे कि चौ. लालचन्द को अब फिर नीम के नीचे बैठकर मुवक्किलों से सिर खपच्ची करनी पड़ेगी जहां पहले कर लेकिन चौ. छोटूराम ने केस डाला गया तभी भरतपुर के राजा

श्रीकृष्णसिंह से बात कर ली थी कि यदि चौ.लालचन्द केस हार गए तो आप उन्हें अपनी रियासत में विपक्ष मन्त्री ले लेते। राजा कृष्णसिंह ने इसे सहर्ष यह स्वीकार कर लिया था। अब राजा चौ. लालचन्द को तुरंत अपनी रियासत में बुला कर राजस्व मंत्री नियुक्त कर आपने वहां अनेक वर्षों तक राज्य की सेवा की। एक समय आपको महसूस हुआ अब ठीक से कार्य नहीं हो पा रहा। आयु के अनुसार सुस्ति रहते महाराजा को वित्त मंत्री पद से त्याग पत्र देना चाहा लेकिन राजा ने स्वीकृति नहीं दी। चौ. लालचन्दने कुछ दिन सावधानी से काम किया तथा राज्य की 800 बीघा जमीन व बाग राजा के नाम नहीं थी तहसीलदार बुलाकर राजा के नाम कानून के तहत यह काम जरूरी था तथा लटका हुआ था ठीक करवा दिया। अब फिर चौ. लालचन्द ने लिखित राजा को अपना त्यागपत्र सौंप दिया, लेकिन राजा ने स्वीकार नहीं किया चौ. लालचन्द ने महाराज से कहा कि आप चौ. छोटूराम को बुलाकर मेरा कार्य उन्हें सौंप दें और मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लें। महाराजा ने चौ. छोटूराम को कहा कि आप भरतपुर में आकर मंत्री पद ग्रहण कर लें तथा अपनी शर्तें लिखकर इन्हें सभी शर्तें हमें स्वीकार होंगी लेकिन चौ. छोटूराम ने राजा को संदेश भिजवाया तो फिर उन्होंने कहा कि मैं पंजाब छोड़कर आपके पास आने में असमर्थ हूं। मेरे पंजाब में कुछ लक्ष्य हैं। जो मैंने पूर्ण करने हैं। वे पंजाब में मंत्री रहते ही पूर्ण हो सकते हैं जो कि बहुत जरूरी है। चौ. लालचन्द त्यागपत्र पर अड़ गए। राजा को न चाहते हुए भी उनका त्यागपत्र स्वीकार करना पड़ा। अन्य सभी अफवाहें राजनैतिक रूप से फैली है जो गलत थी। आज भी भरतपुर राज परिवार में और चौ. लालचन्द के परिवार में आना जाना है।

डीएलएफ कंपनी बनाई

चौ. लालचन्द के सुपुत्र चौ. रघुवेन्द्र ने दिल्ली लैंड एंड फाइनेंस कम्पनी (डी.एल.एफ.) बनाई। भूमि खरीदकर कालोनियां विकसित की। पहली कालोनी रोहतक में डी. एल. एफ. कालोनी बसाई 160 प्रतिशत दिल्ली तथा 80 प्रतिशत गुड़गांव डीएलएफ ने ही बसाया है। इसी से चौ. लालचन्द का परिवार धनवान बना।

गांव में सड़क बनवाई :– चौ. साहब ने सोचा गांव में सड़क बननी चाहिए। युक्ति सूझी कि क्यों नहीं वायसराय साहब को गांव के घर पर खाने के लिए बुलाया जाए। वायसराय के आने से पहले ही सड़क बनकर तैयार हो गई। वे गांव में एशिया का बड़ा अस्पताल बनवाना चाहते थे, लेकिन गांव के लोग कुछ गलत फहमियों में फंसे थे। उन्होंने सहयोग नहीं दिया और जमीन देने से मना कर दिया।

चौ. लालचन्द के बारे में अफवाहें निराधार

कई अफवाहें चौ. लालचन्द के बारे में चली हुई है लेकिन कहीं उनका उल्लेख नहीं मिलता। उनके साथ काम करने वाले व्यक्तियों तथा अन्य बुजुर्गों ने भी सभी अफवाहों को नकारा है फिर भी प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेषताएं तथा कुछ कमियां आदि जो हो सकना संभव होता है लेकिन चौ. लालचन्द एक विवेकशील, बुद्धिमान, ईमानदार हवा के व्यक्ति थे। संतोषी और सरल स्वभाव के भी थे। बड़े हंसमुख व ठल्लेमार व्यक्ति थे। रूप से लेकिन आप समाज में संघर्षशील नहीं थे। साधारण जनता में उनका घुलना–मिलना नहीं था। उनके संबंध ऊँचे लोगों से थे, लेकिन जन साधारण का बुरा भी नहीं करते थे। बल्कि लोगों की भलाई के लिए अंग्रेजों से भी अड़ जाते थे। इसलिए अंग्रेज भी उनका लोहा मानते थे। चौ. लालचन्द की अत्येष्टि पर भरतपुर से महाराजा बिजेंद्रसिंह तथा श्री बच्चूसिंह आये थे। ये चौ. छोटूराम की बरसी पर भी अनेक बार आये हैं। इन्होंने सभी अफवाहों को नकारा है। चौ. लालचन्द के बाद भरतपुर के खजाना मंत्री खाण्डा खेड़ी के चौ. सूरजमल बने थे। उन्होंने भी चौ. लालचन्द को बेलाग बताया है। कहा कि राजनीति की उठा–पठक में उन्हें बदनाम किया गया है।

जब भरतपुर के राजा जाट स्कूल के उत्सव पर आते थे तो खाना चौ. लाल के यहां ही हमेशा खाते थे। यदि उनके प्रति कोई दुर्भावना होती तो वे सभी के रोहतक निर्माताओं को छोड़कर चौ. लालचन्द के यहां खाना खाने क्यों जाते ? आपके दादा जमनादास क्षेत्र के प्रसिद्ध संत थे। उन्होंने गांव के ब्राह्मणों को 300 बीघा जमीन दी थी। आपके छोटे भाई तहसीलदार भरत सिंह तथा बड़े भाई चौ. रामस्वरूप इलाके में बड़े प्रसिद्ध और ईमानदार व्यक्ति समझे जाते हैं। ऐसे परिवार में जन्म लेकर तीसरे पोते थे चौ. लालचन्द कैसे कोई गलत कार्य कर सकते हैं। हम उन्हें स्मरण कर नतमस्तक।

चौ. रघवेन्द्रसिंह

चौ. लालचन्द के बड़े सुपुत्र चौ. रघवेन्द्रसिंह ने चौ. लालचन्द के बाद डीएलएफ का कार्यभार संभाला। आज यह कम्पनी देश की बड़ी कम्पनियों में गिनी जाती है। चौ. रघवेन्द्र के दो बेटी हुई बड़ी इंदिरा इलाहाबाद के कुशलपाल सिंह (के. पी.सिंह) से ब्याही आज कुशलपाल सिंह डी.एल.एफ. के सी. एम.डी है।

चौ.लालचन्द के दूसरे सुपुत्र शमशेरसिंह संयुक्त पंजाब के आई.जी. इंस्पेक्ट जरनल पुलिस रहे हैं। आप बड़े कर्मठ व ईमानदार पुलिस अधिकारी थे। सेवामुक्ति में भी आपने साधुओं के समान जीवन व्यतीत किया। आप एक आदर्श पुरुष थे तीसरे पुत्र श्री देवेन्द्रसिंह एक जाने माने उद्योगपति रहे हैं। आपने राजपुरा (पंजाब) कई सौ एकड़ में इंडिया केवल लिमिटेड (आई.सी.एल.) उद्योग स्थापित किया। जीन्द के किला जफरगढ़ (खुड़ाली) में भी 200 एकड़ में आई. सी. एल. स्थापित की तथा रोहतक के गांव खेड़ी साथ में 80 एकड़ में हरियाणा टेलिकॉम उद्योग स्थापित किया।

हुजूर महाराज चरन सिंह जी

(डेरा बाबा जैमल सिंह के जानशीन नं. 4)

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

हुजूर महाराज चरन सिंह जी सरदार हरबन्स सिंह जी के सबसे बड़े सुपुत्र तथा हुजूर महाराज सावन सिंह जी के पौत्र हैं। आपका जन्म 12 दिसंबर, 1916 को अपने ननिहाल मोगा (जिला फिरोजपुर) में हुआ। बचपन से ही हुजूर बड़े महाराज जी का आपके साथ बहुत प्यार था। आपके जवान होने के बाद तो हुजूर को आपकी योग्यता और बुद्धिमानी पर विश्वास बढ़ गया और कई बार महत्त्वपूर्ण कार्यों के बारे में आपसे सलाह लिया करते थे। महाराज चरन सिंह जी ने भी कभी उन्हें सिर्फ दादा जी ही नहीं समझा, बल्कि परमपिता परमात्मा का रूप मानकर उनकी हर आज्ञा का पालन करना और उनकी रजा में राजी रहना अपना पहला फर्ज समझा। सन 1920–21 में जब आपकी आयु लगभग चार–पाँच वर्ष की थी।

हुजूर बड़े महाराज जी ने आपको अपने पास डेरे बुलवा लिया। सतगुरु की संगति में, उनकी प्रेम के साथ देख–रेख और डेरे के रूहानी वातावरण में आपकी बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था बीती। डेरे में रहते हुए ही आपने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। इस प्रकार बचपन में ही हुजूर बड़े महाराज जी ने आपके अंदर रूहानियत की वह ज्योति जाग्रत कर दी, जिसे आगे जाकर देश–विदेश में प्रकाश और जागृति का प्रसार करना था।

डेरे आने के कुछ ही दिनों के बाद हुजूर बड़े महाराज जी ने आपको शब्द धुन बख्शी और प्रतिदिन कुछ समय अभ्यास में बैठने का हुक्म दिया। आप उस छोटी उम्र में भी रोज नियमपूर्वक अभ्यास को समय देते थे।

"हुजूर बड़े महाराज जी आपको बहुत प्यार करते थे। उन दिनों जब भी हुजूर सिकंदरपुर जाते तो आपको अपने साथ ले जाते और साथ ही वापस ले आते। आपके लिए डेरा ही घर था तथा हुजूर बड़े महाराज जी ही माता–पिता और परिवार थे। उस छोटी उम्र में भी आपकी के प्रति गहरी भक्ति और प्रीति थी। श्री दुर्गा दास सहगल जो आजकल चंडीगढ़ में पर्यटन विभाग के संचालक थे, अपना आँखों देखा एक वृत्तांत सुनाते हैं। तब महाराज चरन सिंह जी की आयु दस ग्यारह वर्ष की थी। एक दिन शाम को स्कूल से लौटने पर आपने हुजूर बड़े महाराज जी के चरणों में माथा टेका और दोनों बाँहों से चरणों में लिपट गए। हुजूर ने आपको प्यार के साथ थपथपाते हुए फरमाया, "बेटा! मैं तुझसे बहुत खुश हूँ। बता तुझे क्या चाहिए?" आपने उत्तर दिया कि कुछ नहीं चाहिए। हुजूर ने फिर पूछा, "जो भी तू माँगे, मैं देने को तैयार हूँ।" आपने फिर वही जवाब दिया। हुजूर दीनदयाल ने तीसरी बार वही वचन दोहराए। इस पर आपने बड़ी नम्रता से अर्ज की, "मुझे तो सिर्फ आप ही चाहिए।" बालक का यह उत्तर सुनकर बड़े महाराज जी का चेहरा मुस्कान से खिल उठा और खुश होकर फरमाया, "बेटा! तुम मुझे पाओगे।"

30 जनवरी, 1933 को हुजूर महाराज जी ने आपको नामदान देकर उस मार्ग का भेद बताया जिस मार्ग पर लगाकर आपने लाखों जीवों का उद्धार करना था। हालाँकि आप अपने अभ्यास के बारे में कभी जिक्र नहीं करते, पर आप नियमित रूप से अभ्यास करते थे। कॉलेज के दिनों में आपका खयाल सत्संग और भजन सिमरन की ओर इतना ज़्यादा हो गया कि हुजूर बड़े महाराज जी ने आपसे फरमाया कि अभी तुम्हारा भजन करने का वक्त नहीं आया है, अभी अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान दो। बाद में जब सिरसा में आप वकालत करते थे तो अपने निवास स्थान के पास सत्संग घर की छत पर बनी छोटी कोठरी में जाकर भजन में बैठ जाते और नौकर को आदेश दे देते कि अगर कोई मिलने आए तो कह दे कि आप घर में नहीं हैं।

25 नवंबर, 1944 की सुबह हुजूर महाराज चरन सिंह जी का शुभ विवाह पिसावा में राज परिवार के राव साहिब की सुपुत्री हरजीत कौर के साथ संपन्न हुआ। बारात में हुजूर सावन सिंह जी महाराज, परिवार के लोग तथा कई प्रमुख सत्संगी शामिल थे। हुजूर बड़े महाराज जी ने पिसावा में दो–तीन सत्संग भी बख्शे । राव साहिब ने बड़े प्रेम से खातिरदारी की, इससे सब बाराती बहुत प्रभावित हुए तथा हुजूर महाराज जी बहुत प्रसन्न हुए।

सितंबर 1947 में सरकार ने महाराज चरन सिंह जी को सिरसा में जज (न्यायाधीश) के पद पर नियुक्त करने का निश्चय किया। आपके परिवार के लोग, मित्र तथा प्रियजन बहुत प्रसन्न हुए। परंतु आपने अपने सतगुरु की आज्ञा के बिना इस बारे में कोई भी निर्णय लेना स्वीकार न किया। सितंबर के अंत में हुजूर महाराज सावन सिंह जी बीमार थे और इलाज के लिए अमृतसर तशरीफ ले गए थे। हुजूर की सेहत का समाचार सुनकर आप भी अमृतसर आए। जब हुजूर की सेहत कुछ ठीक हुई तो एक–दो पुराने सत्संगियों ने हुजूर से अर्ज की कि पंजाब सरकार, सरदार चरन सिंह जी को जज बनाना चाहती है। इस पर बड़े महाराज जी ने फरमाया, 'नहीं! यह काम इनके लिए नहीं है।' कुछ लोग फिर भी हुजूर से अर्ज करते रहे। एक दिन एक प्रमुख सत्संगी (जो खुद एक

रिटायर्ड सेशन जज थे) ने महाराज जी से काफी जोर देकर विनती की कि हुजूर बड़े महाराज जी इन्हें जज का पद स्वीकार करने की इजाजत दे दें। हुजूर ने उत्तर दिया, "जज बनने में क्या रखा है! जज क्या होता है! यों ही इन पर इस ओर जाने का दबाव मत डालो।" फिर हुजूर बड़े महाराज जी ने आपसे कहा, "बेटा! जज बनकर क्या करना है? देख तो सही बाबा जी की क्या मौज है।" कुछ देर बाद हुजूर ने फरमाया, "अब प्रैक्टिस छोड़ दे और फार्म पर अपने पिता की मदद कर, उनकी सेहत कमजोर हो रही है।

हुजूर के दो पुत्र और एक पुत्री हैं। पुत्र हैं सरदार जसबीर सिंह और राणा रणवीर सिंह। दोनों पंजाब में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। सुपुत्री निर्मलजीत कौर ने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है। इनका विवाह दिल्ली के प्रसिद्ध व्यापारी परिवार में सरदार भाई मोहन सिंह के सुपुत्र डॉ. सरदार परमिन्दर सिंह के साथ हुआ है। डॉ. परमिन्दर सिंह बुद्धिमान, नेकदिल और विनयशील नवयुवक हैं और एक अच्छे सत्संगी के गुणों से भरपूर हैं।

गद्दीनशीनी

हुजूर महाराज चरन सिंह जी ने पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) में एल.एल.बी. पास करके सिरसा में वकालत शुरू की और शीघ्र ही आप वहाँ के श्रेष्ठ वकीलों में गिने जाने लगे। वहाँ के समाज और जनता में आप इतने लोकप्रिय हो गए कि सन् 1951 में कांग्रेस तथा कुछ अन्य पार्टियों ने आपसे पंजाब विधान सभा का चुनाव लड़ने का आग्रह किया। अगर आप राजनीति में आ जाते तो संभव था कि आप मंत्री बनाए जाते। परंतु कुलमालिक के दरबार से तो आपको रूहानियत का बादशाह बनाने का फैसला हो चुका था। चुनाव में खड़े होने के लिए सरदार बहादुर जी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया। इसका पूरा विवरण पहले दिया जा चुका है अर्थात सरदार बहादुर जगत सिंह के ज्योति ज्योत समाने के बाद उनको डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास की गद्दीशीन महाराज चरण सिंह को दी गई।

सरदार बहादुर जी महाराज के मना करने के बाद किसी प्रकार के तर्क का प्रश्न ही नहीं उठता था। आपने जिस प्रकार हुजूर सावन सिंह जी महाराज के सुझाव पर 1947 में अपनी जमी जमाई बहुत अच्छी प्रैक्टिस छोड़ दी थी, उसी प्रकार चुनाव का खयाल भी दिल से निकाल दिया। बचपन से ही आपका स्वभाव था कि आप किसी आकांक्षा या इच्छा के पीछे नहीं पड़ते थे। यदि कोई इच्छा दिल में होती और वह साधारण तरीके से पूरी हो जाती तो आप संतुष्ट रहते और अगर पूरी न होती तब भी दिल में अफसोस न होता। हर तरह से मालिक की मौज में संतुष्ट और निश्चित रहते। आपने सरदार बहादुर जी महाराज के हुक्म को अंतिम निर्णय मानकर चुनाव वाली बात को बिलकुल भुला दियाय हालाँकि आपके मित्र और प्रियजन इस पर अवश्य निराश और दुःखी हुए। सरदार बहादुर के बाद राज चरण सिंह जी गद्दी पर भेंटे और सत्संग करना शुरू कर दिया।

रविवार 25 अक्तूबर, 1953 के दिन सरदार बहादुर जी महाराज का भंडारा था। संगत काफी संख्या में आई हुई थी। सत्संग घर का मैदान भर गया था। हुजूर महाराज चरन सिंह जी ने करीब डेढ़ घंटे तक प्रभावशाली सत्संग किया। सत्संग समाप्त होते ही बाबा जी महाराज के बुजुर्ग सत्संगी बाबू गुलाब सिंह जी उठे और बोले कि मैं कुछ अर्ज करना चाहता हूँ। हुजूर की इजाजत से आप लाउड स्पीकर पर आए और कुछ मिनट बोले। आपने अर्ज की, "हुजूर की सेवा में मैं पहले भी कई बार प्रार्थना कर चुका हूँ कि नाम की बख्शिश शुरू करें। नाम के प्यासे जीव तड़प रहे हैं। पिछली बार जब मैं दिल्ली गया तो कई प्रेमी सत्संगियों ने मुझसे कहा कि इस बार अगर महाराज जी नामदान नहीं बख्शेंगे तो हम दिल्ली आने पर उनकी मोटर के आगे लेट जाएँगे और नाम दिए बिना नहीं जाने देंगे। सारी संगत आज आस लगाए बैठी है। मैं आज फिर अपनी ओर से, संगत तथा नाम के अभिलाषियों की ओर से विनती करता हूँ कि हुजूर नाम के खजाने का द्वार खोल दें और नाम के लिए तरसते जीवों की प्यास बुझाएँ।"

26 अक्तूबर, 1953 को सतगुरु दीनदयाल ने अपनी दया–मेहर का भंडार खोल दिया। सुबह नौ बजे नामदान की बख्शिश शुरू कर दी है।हुजूर महाराज चरन सिंह जी ने 1957 में इस सारी पारमार्थिक संपत्ति का एक ट्रस्ट बनाने का निश्चय किया। जब आपने ये विचार राय साहिब मुन्शी राम, राय बहादुर शंकर दास तथा कुछ दूसरे बुजुर्ग सत्संगियों के सामने प्रकट किए तो उन्होंने इसका विरोध किया। उन्होंने अर्ज की कि संतमत के मूल सिद्धांत और परंपरा के अनुसार इस पूरी रूहानी जायदाद तथा सेवा में आनेवाली धनराशि के आप अकेले मालिक हैं और यह आपके ही नाम में रहनी चाहिए। परंतु हुजूर ने फरमाया कि शुरू से डेरे में सतगुरु इस संपत्ति को संगत की अमानत के रूप में रखते और सँभालते आए हैं। वास्तव में वह उसके ट्रस्टी हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इसी सिद्धांत और परंपरा को कानूनी रूप दे दिया जाए ताकि भविष्य के लिए स्थायी प्रबंध हो तथा डेरे के सभी कार्य सही रूप से चलते रहें। हुजूर ने यह भी समझाया कि इस प्रकार का प्रबंध होने से हुजूर को सत्संग तथा संगत की सेवा के लिए अधिक समय मिल सकेगा।

इसलिए हुजूर ने खुद को इस सारी संपत्ति का ट्रस्टी घोषित किया और इस घोषणा को 25 अक्तूबर, 1957 के दिन एक रजिस्टर्ड डीड के द्वारा कानूनी रूप दे दिया। उसी दिन

हुजूर ने इस पूरी संपत्ति को रजिस्टर्ड ट्रस्ट सोसाइटी 'राधास्वामी सत्संग ब्यास' के नाम हस्तांतरित कर दिया। 'राधास्वामी सत्संग ब्यास' 11 अक्तूबर, 1957 को रजिस्ट्रेशन एकट 21 (1860) के अंतर्गत रजिस्टर की जा चुकी थी।

विदेशों की यात्रा

हुजूर ने 8 मई, 1961 को डेरे से चलकर दिल्ली और बंबई होते हुए सुदूर पूर्व की यात्रा पर प्रस्थान किया। श्री राम नाथ मेहता हुजूर के साथ सेक्रेटरी के रूप में गए। हुजूर ने श्रीलंका, सैगॉन, बैंकॉक, सिंगापुर, हाँगकाँग, टोकियो तथा जापान के कुछ दूसरे नगरों में सत्संग की अमृत वर्षा की तथा नामदान देकर जीवों का उद्धार किया।

19 जून सें 26 जून तक हुजूर ने लंदन तथा आसपास के स्थानों पर सत्संग की अमृत वर्षा की और कुछ स्थानों पर नामदान भी दिया। इंग्लैंड में भारतीय सत्संगी भी काफी संख्या में है।

हुकुर महाराज चरन सिंह जी का अमेरिका दौरा एक ऐतिहासिक घटना है। इसी प्रकार डेरे में लाखों लश–प्रणाली के शौचालय हैं। सन 1965 से 1971 तक पाँच आई कैंप आयोजित हो चुके हैं।

डेरे की दिनचर्या

डेरे में निवास करनेवाले तथा देश–विदेश से यहाँ आनेवाले सत्यंगियों के लिए एक नियमित दिनचर्या है। सत्संगी का दिन बहुत सवेरे तीन बजे से होता है। चाहे सर्दी की कँपा देनेवाली बाहली रात्रि हो अथवा शुरू गर्मी या बरसात की उमस भरी रात, सवेरे तीन बजे हरे की खामोशी में सायरन की आवाज गूँज उठती है। सत्संगी डेरे के शांत व प्रसन्नता भरे वातावरण में, रात्रि के विश्राम के बाद हलके शरीर और स्वस्थ मन से अपने बिस्तर से उठकर भजन सिमरन में बैठ जाते हैं। मालिक का प्रदान किया प्रत्येक दिन उसी की भक्ति और इबादत से शुरू किया जाता है। ढाई–तीन घंटे के रूहानी अभ्यास के बाद करीब छः बजे भजन से उठते हैं।

गर्मियों में सवा आठ बजे और सर्दियों में साढ़े नौ बजे प्रतिदिन सवेरे सत्संग होता है जिसमें हुजूर महाराज जी तशरीफ लाते हैं और एक या डेढ़ घंटे तक अपनी मधुर प्रेम भरी वाणी तथा सरल भाषा में सत्संग करते हैं। हजारों सेवादार संगत की सेवा के लिए नियत कर दिए जाते हैं।

1 जून 1990 को ज्योति जोत समा गये। इससे पहले इन्होंने अपने बाद डेरे को संभालने के लिये गद्‌दीनशीनी–5 के रूप में श्री गुरिन्द्र सिंह ढ़िल्लो की घोषणा कर दी थी। मौजूदा सतगुरू द्वारा अब तक डेरे को विकसित करने और संतमत का प्रचार–प्रसार करने का कार्य सुचारू रूप से चलाया जा रहा है और देश/विदेशों में सत्संग करने व नाम दान देने का कार्य सुचारू रूप से किया जा रहा है।

True history of the Jats

- Suraj Bhan Dahiya

Our historians have achieved the dubious distinction of making history by destroying history. In recent times, there has been a substantial controversy over the interpretation of Jat history. Some derogatory references have been made about the Jat history in NCERT text books.

The word Jat has been derived from the Sanskrit word "Jati Sanghwate" which means 'people living In a group'. The origin of the Jats is connected with Indus Civilization and this evokes an Aryan connection. The Jats are, therefore, indigenous Aryans. This provides a lineal descent of 5000 years to Jat community in the subcontinent. All Jats are agriculturists by profession. A scholar of economic and peasant history, Habib has revealed that the word's first zone of peasant uprising was Mehargarh near Quetta in the 7th century B.C. He added that, Haryana in the largest excavated area of Indus Valley Civilization sites in the world. Archaeology, therefore can provide continuous history of the Jats. But very work has been done so far in this regard.

The greater majority, if not all of the Aryans bore tribal names which corresponds to the Jat Gotras today. So it is not surprising that by the time of the great Persian Empire, 500 BC which included parts of modern Sind and Punjab, the Jats were the leading warrior race in India. We learn of race, variously called Goths, jutes or the Getae, who are now accepted as having been European Jats. The Jat makes a perfect soldier, mercenary or otherwise because his simple down to earth practical life following on, from his strong peasant arms, keep eyesight and natural indomitability, requires only that he be properly led. Unfortunately, there is leadership vacuum among the Jats today hence their true identity is in danger.

Alexander's Greeks were the first to remark on Jet indomitability. In fact it is believed to be one of the reasons that his army just fed up and left because

the Jats never stopped fighting, even when beaten the enemy. To the credit of the Jats in Indian History stands many first defeats of reputed warriors like Selecus of the Greak and Mahmud Gazani from whom they took away Kashirin in 1014, Alauddin Khilji at the Battle of Tilpat in 13 AD and Lord Lake at the Battle of Bharatpur, 1804. The battles fought by Maharaja Ranjit Singh and the Meos of Mewat also reflect glorious traditions of the Jats.

Next year 150th anniversary of 1857 uprising will be celebrated with great fanfare. A 68 member national committee led by the Prime Minister has already been constituted. The Uprising rose from the Jat land or green revolution belt around Delhi. The Jat peasantry revolted against Company Sarkar over harsh rigid and suppressive land revenue in 1847 and the struggle continued for the years. Ultimately the villagers captured Delhi and formed **Janata Sarkars** in 1857. The attempt later failed because of some known reasons; however, it initiated India's freedom movement. Although the idea of an authorized history of 1857 uprising for the 150 anniversary seems to have been cropped by the committee, yet the role of Jats in 1857 uprising cannot be diluted. After the Uprising the British treated the Jats villages thousands Jats were crushed to death with road rollers, hundreds of Jat villages were set on fire and the properties of thousands of Jats were confiscated. This is the history which should form the part of history text books of our school children. Instead of Waterloo war our children should be taught the Battle of Dograi - infantry's finest battle of 1965.

After Independence, the Jats had given supreme sacrifices for the motherland. India had to face five wars after 1947 and over 9000 army men laid their lives in these battles. Majority of them were the Jat soldiers, History has been thus very unkind to the Jats. How a virile race has been made history-less in the NCERT text books, is now a matter of great concern. The Jats, whether the Hindus or the Sikhs or the Muslims, have played very big. significant roles in national building. There is, therefore an urgent need for an in-depth research work. on their role in the uprisings and movements and also in agricultural production in the modern period. The uncalled for bad references about the virile Jat race in NCERT text books should also be deleted.

भारत की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले

– प्रोफेसर सुभाष चंद्र

आज सार्वजनिक जीवन हर क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति दिखाई देती है। हमेशा से ऐसा नहीं था, इसके लिए समाज में अनेक समाज सुधारकों ने संघर्ष किया है। भारत की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने भारतीय समाज में मौजूद धर्मभेद, वर्णभेद, जातिभेद, लिंगभेद के खिलाफ कार्य किया। वे जैविक बुद्धिजीवी थी, जिन्होंने अपने अनुभवों से ही अपने जीवन–दर्शन का निर्माण किया। सावित्रीबाई फुले ने समाज में सत्य, न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानव भाईचारे की स्थापना के लिए अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए। क्रांतिकारी कार्यों के लिए रूढ़िवादी समाज की प्रताड़नाओं को सहन किया, लेकिन पूरी जिंदगी दृढ़ संकल्प के साथ कार्य किया।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले के नायगांव में हुआ। सावित्रीबाई फुले के पिता का नाम था खंडोजी नेवासे पाटिल और माता का नाम लक्ष्मी था। सावित्रीबाई के तीन भाई भी थे, सिदु जी, सखाराम और श्रीपति। सावित्रीबाई इनमें सबसे बड़ी थी। सन् 1840 में सावित्रीबाई फुले का विवाह जोतिबा फुले से हुआ। इस समय सावित्रीबाई की उम्र 9 साल थी और जोतिबा की 13 साल। सावित्रीबाई और जोतिबा फुले का विवाह दो महान शख्सियतों का मिलन था। इस जोड़ी ने मिलकर आधुनिक भारत का नक्शा बनाया। सावित्रीबाई फुले को उनके पति जोतिबा फुले ने शिक्षा दी। उस समय में यह एक असामान्य बात थी। भारतीय समाज में धार्मिक व्यवस्था के तहत स्त्री और शूद्र को शिक्षा से वंचित रखा गया। वर्ण–धर्म की रूढ़िवादी धारणा समाज में स्थापित हो गई थी कि यदि स्त्री और शूद्र वर्ग शिक्षा प्राप्त करेंगे तो उन्हें विशेषतौर पर और पूरे समाज को घोर विपत्ति का सामना करना पड़ेगा।

सन् 1848 में जोतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले ने पुणे के बुधवार पेठ में लड़कियों के लिए स्कूल खोला। इसी स्कूल में सावित्रीबाई शिक्षिका हुई और पहली भारतीय महिला शिक्षक होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस स्कूल में कुल 6 लड़कियों ने प्रवेश लिया था। इसके बाद सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले ने पूना के क्षेत्र में 18 स्कूल खोले। सावित्रीबाई का मानना था कि जब तक सामाजिक जीवन में अज्ञानता है तब तक सुधार और तरक्की संभव नहीं है। अज्ञानता को वह मानवता का सबसे घातक दुश्मन समझती थी और इसे अपने जीवन से ढूंढ

ढूंढकर और पीटकर भगाने का आह्वान करती थी। अपनी 'अज्ञान' कविता में लिखा है कि –

एक ही दुश्मन है हम सबका, सब मिलकर खदेड़ो उसे पीटकर
नाम स्पष्ट है एक ही उसका, अज्ञान
कस के पकड़ो, पीटो उसे अपने बीच से खदेड़ दो।

सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले के लड़कियों और अछूतों के लिए शिक्षा के काम का रूढ़िवादी समाज ने विरोध किया। सावित्रीबाई फुले जब स्कूल के लिए निकलती तो उन पर गोबर–पत्थर फेंकते। गोबर से सावित्री बाई फुले की साड़ी गंदी हो जाती थी। इसकारण वह एक अतिरिक्त साड़ी अपने साथ लेकर जाती थी। स्कूल में जाकर साड़ी बदल लेती थीं। गोबर–पत्थर फेंकने वालों की इन हरकतों से वह निराश नहीं हुई। उनसे वह कहती मेरे भाइयों, मुझे प्रोत्साहन देने के लिए, आप मुझ पर पत्थर नहीं, फूलों की वर्षा कर रहे हैं, तुम्हारी इस करतूत से मुझे यही सबक मिलता है कि मैं निरंतर अपनी बहनों की सेवा में लगी रहूं। ईश्वर तुम्हें सुखी रखे।

सन् 1863 में सावित्रीबाई और जोतिबा फुले ने 'शिशु हत्या प्रतिबंधक गृह' शुरू करके क्रांतिकारी कदम उठाया। उस जमाने में बाल–विवाह होते थे और अनेक कारणों से पति की मृत्यु के कारण बाल–विधवाओं की संख्या काफी थी। इन विधवाओं के यौन–शोषण के कारण ये गर्भवती हो जाती थी। सामाजिक सम्मान बचाने के लिए कई अमानवीय कदम उठाए जाते थे। गर्भ को गिराने के प्रयास किए जाते थे, जिससे महिलाओं का स्वास्थ्य खराब होता था। कई मामलों में महिलाएं आत्महत्या कर लेती थी। कई मामलों में नवजात शिशु की हत्या की जाती थी। कई मामलों में महिलाओं की हत्या कर दी जाती थी और कई मामलों में उन्हें घर से बाहर खदेड़ दिया जाता था। विशेषतौर पर गौर करने की बात यह है कि इसमें अधिकांश महिलाएं उच्च जाति से ताल्लुक रखती थी, क्योंकि शास्त्रीय परंपराओं व मान्यताओं को वही समाज अधिक मानता था। निम्न अथवा मध्यम जातियों पर शास्त्रीय परंपराओं की जकड़ अधिक नहीं होने के कारण विधवाओं का विवाह कर दिया जाता था। सावित्रीबाई व जोतिराव फुले ने अपने घर में विधवाओं के लिए प्रसुति–गृह खोला। इस बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की सूचना के लिए पूना में जगह–जगह पोस्टर लगाए गए। इन पोस्टरों पर लिखा थाः

'विधवाओं! यहां अनाम रहकर बिना किसी बाधा के अपना बच्चा पैदा कीजिए।अपना बच्चा साथ ले जाएं या यहीं रखें, यह आपकी मर्जी पर निर्भर रहेगा।'

यह समस्या कितनी भयंकर थी इसका अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि यहां 35 बच्चे पैदा हुए थे, जिनमें से केवल 5 बच्चे जिंदा बचे थे। क्योंकि गर्भ गिराने के प्रयास में उनको पहले ही चोट पहुंचाई जा चुकी थी। सन् 1877 में महाराष्ट्र में भंयकर अकाल पड़ा। लोग अपने भूखों मर रहे थे। चारे के अभाव में पशुओं के गांव–देहात के लोग अपने पशुओं को भगा रहे थे। अपने घरों को छोड़कर शहर में आ रहे थे। सत्यशोधक समाज ने 'विक्टोरिया बाल आश्रम' की स्थापना की जिसमें हजारों लोग हर रोज खाना खाते थे।

सावित्रीबाई फुले को प्रकृति से गहरा प्रेम था। सावित्रीबाई फुले मनुष्य को प्रकृति का अंग समझती है। परस्परता के अभाव में मानव–जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। मूलतः किसान परिवार से ताल्लुक होने के कारण मिट्टी के रंग व खुशबू उसके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा था। जोतिबा फुले का परिवार फूलों के कारोबार संबंधित था विभिन्न किस्म के फूलों के रंगों, खुशबू व कोमलता को उनकी विशिष्टता में पहचानती थी। उनकी 'पीला चम्पा', 'चमेली के फूल', 'जुही की कली', 'गुलाब का फूल', 'तितली और फूलों का कलियां', 'धरती का गीत', 'मानव और प्रकृति' कविताओं पर सरसरी नजर डालने से ही इसका अनुमान हो जाता है।

सन् 1873 को पूना में जोतिबा फुले की अध्यक्षता में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना हुई। सत्यशोधक समाज के काम की तीन दिशाएं थी। भक्त और भगवान के मध्य किसी बिचौलिये की जरूरत नहीं। बिचौलियों द्वारा लादी गई धार्मिक गुलामी को नष्ट करना, अंधश्रद्ध अज्ञानी लोगों को उस गुलामी से मुक्त करना। साहूकारों और जमींदारों के शिकंजे से किसानों को मुक्त करना। सभी जातियों के स्त्री–पुरुषों को शिक्षा प्राप्त करा देना।

जोतिबा फुले की मृत्यु के बाद सन् 1893 में सत्यशोधक समाज के सासवड़ में हुए अधिवेशन में सावित्रीबाई फुले को सत्यशोधक समाज का अध्यक्ष चुना गया। सावित्रीबाई फुले जब तक जिंदा रही तब तक सत्यशोधक समाज का नेतृत्व किया। 28 नवम्बर सन् 1890 को सावित्रीबाई फुले के पति जोतिबा फुले का देहांत हो गया। सावित्रीबाई फुले और जोतिबा फुले की अपनी संतान नहीं थी। इन्होंने अपने बाल हत्या प्रतिबंधक गृह में पैदा हुए बच्चे को गोद लिया था और इसका नाम यशवंत रखा था। जोतिबा फुले ने अपनी वसीयत में उत्तराधिकार के समस्त अधिकार यशवंत को दिए थे। एक परंपरा यह थी कि जो व्यक्ति अंतिम यात्रा में 'तित्वा' (मिट्टी का छोटा घड़ा) उठाकर चलता, वही मृतक का उत्तराधिकारी माना जाता था और मृतक की संपति प्राप्त करता था। संपति के लालच में जोतिबा फुले के भतीजे (भाई के लड़के) ने यशवंत को दत्तक पुत्र बताकर 'तित्वा' उठाने पर विवाद किया और रक्त संबंधी होने के कारण इसे निभाने का दावा किया। इस विवाद में सावित्रीबाई फुले स्वयं 'तित्वा' उठाकर चली और अपने पति

जोतिबा फुले का अंतिम संस्कार किया। शायद यह भारत की पहली महिला थी जिसने अपने पति को मुखाग्नि दी। जिस समाज में स्त्रियों का श्मशान भूमि में जाना तक वर्जित हो उसमें यह साहसिक कदम ही कहा जाएगा। 10 मार्च को 1897 को शहीद हुई। उनको शहीद की संज्ञा देना कुछ लोगों को एकबारगी शायद अजीब लगे। लेकिन उनको शहीद कहना अतिश्योक्ति नहीं है। क्योंकि उनको अच्छी तरह से मालूम था कि मानव भलाई का जो कार्य वे कर रही हैं इसमें उनकी जान भी जा सकती है। यही है शहादत का जज्बा।

1897 में पूना में प्लेग फैल गया था। लोग मर रहे थे धड़ाधड़। चारों तरफ त्राहि त्राहि मची थी। संक्रामक बिमारी होने के कारण लोग डरे हुए थे। अपने बेटा–बेटी, मां–बाप, भाई–बहन तक को छूने से डरते थे। कहीं प्लेग की चपेट में ना आ जाएं। सावित्रीबाई को पता चला कि महार बस्ती में पांडुरंग बाबाजी गायकवाड़ का लड़का प्लेग की चपेट में है। कोई उसे छू भी नहीं रहा। उसे अपनी पीठ पर बिठा कर हस्पताल लाई। प्लेग ने सावित्रीबाई को अपनी चपेट में ले लिया। चार महीने बाद 10 मार्च 1897 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

सावित्रीबाई फुले को यह बात अच्छी तरह से ज्ञात थी कि प्लेग जानलेवा बीमारी है और संक्रमण से फैलती है। मानव–सेवा की मूर्ति सावित्रीबाई फुले ने अपनी जान की परवाह न करते हुए मानव–सेवा के कार्य को अंजाम दिया। मानवता की सेवा के लिए शहीद सावित्रीबाई फुले को सलाम।

उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक समाज सुधारकों ने समाज सुधार के अनेक आंदोलनों की शुरुआत की। राजा राम मोहन राय, केश्वचंद्र सेन, देवेंद्रनाथ ठाकुर, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महान सुधारकों ने भारतीय समाज की अनेक कुरीतियों पर कुठाराघात किया। इन समाज सुधारकों का संबंध मध्यवर्ग और उच्चवर्ण से था, इसलिए इनका प्रभाव भी इन्हीं वर्गों तक था। इन आंदोलनों का कार्यक्षेत्र स्त्री शिक्षा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, अनमेल विवाह तक सीमित था।

फुले–दम्पति का संबंध समाज के निम्न–वर्ग से था और इनका प्रभाव समाज के निचले वर्गों शूद्रों–अतिशूद्रों और किसानों तक फैला था। जाति–व्यवस्था का खात्मा, छुआछूत का खात्मा, धार्मिक–पाखण्डों व अंधविश्वासों का निराकरण, भेदभावपूर्ण जातिगत व लैंगिक मूल्यों की सामाजिक जीवन से समाप्ति, धार्मिक आवरण में गरीबों का शोषण, सामाजिक विषमता, अज्ञानता, ब्राह्मणवादी सांस्:तिक वर्चस्व के स्थान पर समाज में लैंगिक समानता, सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता, वैज्ञानिक व तार्किकता की स्थापना इनके आंदोलनों के उद्देश्य था।

सत्य और न्याय के लिए संघर्षरत लोगों के लिए सावित्रीबाई फुले का जीवन प्रेरणादायी है। इनके जीवन संघर्षों और चिंतन का भारतीय समाज पर विशेषकर दलितों–वंचितों–शोषितों के आंदोलनों और जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। फुले–दम्पति के संघर्ष मुक्तिदाता बाबा साहेब डा. भीमराव आंबेडकर की संघर्षों व चेतना की प्रेरणा बने।

अमेरिका की न्याय प्रणाली और हमारी पंचायत व्यवस्था

– फूल कुमार मलिक, निडाना

एक दिन मैं छुट्टी के दिन भारत के समकक्ष विभिन्न देशों में न्यायपालिका कैसे कार्य करती है इस बारे इंटरनेट सर्फिंग कर रहा था और संयोग हुआ कि साथ ही अमेरिका से मेरे एक अजीज मित्र भरत ठाकरान से भी वॉइस चौट हो रही थी। इस पोस्ट के टाइटल के हिसाब से जो कुछ इंटरनेट पे सर्च करके पढ़ा तो उसका प्रैक्टिकल रिफरेन्स पाने हेतु उनसे बात की। उनकी और इंटरनेट की सर्च का निष्कर्ष अमेरिका और भारत की न्याय–प्रणाली में क्या समरूप है और क्या भिन्न, उसके इस प्रकार तथ्य सामने आयेः–

1) अमेरिका के किसी भी गांव या शहर में जब भी कोई विवाद या अपराधिक मामला सामने आता है तो उसको जिला कोर्ट में पेश किया जाता है जहाँ दोनों पक्षों के वकीलों को एक जज की निगरानी में मामले की प्रकार के अनुसार आमजन में से 11 लोगों का ट्रिब्यूनल यानी जुडिशियल बॉडी चुननी होती है। इन चुने हुए 11 लोगों को दोनों वकील एकांत में इंटरव्यू करते हैं और जो सही नहीं लगता उसको निकाल के उसकी जगह उसी शहर–गांव का कोई दूसरा सदस्य लिया जाता है। दोनों वकीलों के पास इन 11 में से किसी को निकालने या रखने के 3 तक चांस होते हैं।

इसके समरूप भारत में क्या है? भड़कना और बोहें मत चढ़ाना परन्तु इससे मिलती–जुलती या इसके नजदीक लगती प्रक्रिया है खाप पंचायतों की। फर्क सिर्फ इतना है कि भारत में खाप की प्रक्रिया को वकील और जज से नहीं जोड़ा गया है। अमेरिका में जहां वकील और जज केस की स्थानीय लोकेशन के 11 सामाजिक लोगों का ट्रिब्यूनल चुनते हैं, वहीँ खाप में यह काम उस विशेष खाप पंचायत का प्रेजिडेंट करता है और वो 11 की जगह 5 सामाजिक लोगों को पंचायत में ही पब्लिक की उपस्थिति में चुनता है। अमेरिका में इस बॉडी में से किसी सदस्य को बदलने के जहां 3 चांस होते हैं, वहीं खाप में पब्लिक उपस्थिति में पूछा जाता है कि इनमें से किसी नाम पे किसी पक्ष को आपत्ति है तो कहें। कोई आपत्ति आती है तो उस सदस्य को बदल के उसपे फिर पब्लिक राय ले के आगे की कार्यवाही शुरू की जाती है। ध्यान रहे यहां मैं खाप के आदर्श विधान की

बात बता रहा हूँ, उनकी नहीं जो खापों की आड़ या उनको बदनाम करने हेतु उनके नाम से पंचायतें बुला लेते हैं या मीडिया में दिखा देते हैं। ऐसे लोगों पर खापों को निगरानी रखनी चाहिए। और एक बात यह प्रोसेस पूरे भारत में और कहीं की भी गांव–नगर–सोसाइटी पंचायतों में नहीं है, सिर्फ खाप पंचायतों में है।

2) पूरे मामले को यह 11 लोग सुनते हैं, जज और वकील सिर्फ यह सुनिश्चित करते हैं कि सारी कार्यवाही अमेरिकन कानूनी धाराओं के अनुसार हुई है। दोनों पक्षों को सुनने के बाद यह 11 सदस्यीय टीम ही न्याय करती है, जिसको फिर जज दोनों पक्षों को पढ़ के सुनाता है। अगर किसी भी पक्ष को निर्णय पसंद नहीं आया तो उसपे अपील लगती है। जज को लगे कि और सबूत व तथ्य चाहियें तो जज उसी 11 सदस्यीय पैनल को पुलिस की सहायता से सब जरूरी सबूत उपलब्ध करवाता है और फिर से पंचायत बैठती है और नए या छूट गए तथ्यों की उपस्थिति व रौशनी में फिर से केस सुना जाता है। इसमें कोई तारीख–पे–तारीख सिस्टम नहीं होता क्योंकि जज और वकीलों पर प्रेशर रहता है कि 11 सदस्यीय ट्रिब्यूनल के वक्त बरबादी के साथ–साथ न्याय में देरी ना हो।

खाप–पंचायतों में इसके जैसा क्या है ? 5 सदस्यीय पंचायती मंडल दोनों पक्षों और उनके गवाहों को सुनने के बाद, पंचायत के प्रेजिडेंट को अपना फैसला सौंपता है, जिसको प्रेजिडेंट पंचायत में बैठी पब्लिक व दोनों पक्षों को सुनाता है। अगर दोनों पक्ष फैसले से संतुष्ट हुए तो श्ग्राम–खेड़ाश की जय बोल के पंचायत उठ जाती है अन्यथा दूसरी सुनवाई हेतु खाप–पंचायत उसी गाँवध्शहरध्लोकेशन पे ठहरी रहती है और अपनी निगरानी में छूटे हुए या अभी तक सामने नहीं आये तथ्यों को खोजवाती है अथवा ढुँढवाती है। और फिर नए पर्याप्त तथ्य जुटाने पर पहले वाली प्रक्रिया दोहराई जाती है और यह सिलसिला तब तक चलता है जब तक दोनों पक्ष संतुष्ट ना हों। अमेरिकन लॉ और कोर्ट की तरह खाप पंचायत के यहां भी कोई तारीख–पे–तारीख नहीं होती। एक बार किसी मुद्दे पर खाप पंचायत बैठ गई तो खाप का आदर्श विधान कहता है कि वो फैसला करके ही वहां से उठेगी, फिर फैसला करने में कितनी ही सिट्टिंग्स क्यों ना लग जावें।

3) भारत भी अमेरिका की तर्ज पर खाप पंचायतों के फार्मूला को जज व वकील से जोड़ ले तो हम भी 'फेडरल स्टेट' बन जावें। इसकी जरूरत व महत्वता को समझने के लिए हमें अमेरिकी प्रोसेस के फायदे देखने होंगेः–

3.1) 'न्याय में देरी, न्याय को ना' क्योंकि अमेरिका की कानून व्यवस्था ने सामाजिक पंचायत और कानूनी पंचायत को ऊपर बताये तरीके से जोड़ रखा है, इसलिए वहाँ इसकी नौबत नहीं आती। जबकि भारत में एक–एक मुकदमा 20–20 साल चलता रहता है।

3.2) 'कोई–तारीख–पे–तारीख' नहीं, हर फैसले को खाप–पंचायतों की तरह निबटाता है अमेरिका। यानी एक बार ट्रिब्यूनल बैठ गया तो बैठ गया, फिर लगातार उस मुकदमे की सुनवाई चलेगी, देरी हुई तो ट्रिब्यूनल के सदस्य प्रेशर देंगे। एक अध्यन के अनुसार आज भारत में 3 करोड़ से अधिक मामले सिर्फ इस 'तारीख–पे–तारीख' की बला की वजह से लटके पड़े हैं।

3.3) सामाजिक लोगों की भागीदारी होने से रिश्वतखोरी और गवाहों के तोड़ने–मरोड़ने की गुंजाइस कम रहती है क्योंकि ट्रिब्यूनल के सारे सदस्य स्थानीय होते हैं और वो अधिकतर मामलों में दोनों पक्षों के लोगों को निजी स्तर तक जानते होते हैं।

3.4) वकील–जज नियंत्रण में रह के और अपनी जिम्मेदारी समझ के कार्य करते हैं।

3.5) जनता–जनार्धन का राज चलता है, यानी वकील और जज न्याय नहीं करते वो न्याय करवाने वाले होते हैं, न्याय करती है सामाजिक जनता की पंचायत।

लेकिन जब हमारा देश आजाद हुआ तो किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया कि न्याय प्रक्रिया में जनता की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाए। अधिकतर मामलों में जज ना ही तो दोनों पक्षों को जानता होता है, और ना ही उनकी भाषा बोलता–समझता होता है। सामाजिक ट्रिब्यूनल की अनुपस्थिति में फिर रिश्वतखोरी और गवाह तोड़ने–मरोड़ने का जो खेल चलता है वो तो हर भारतीय जानता ही है और भारतीय परिवेश में मैं इसका सबसे बड़ा दोषी मानता हूँ हमारे यहां की जातीय–व्यवस्था को। खापों में तो फिर भी प्राचीनकाल से सब जातियों की भागीदारी रही है (हालाँकि आज मीडिया और एंटी–खाप लोग इसको जाति विशेष की बता, जाति और वर्ण व्यस्था बनाने वाले लोगों से ध्यान हटाना चाहते हैं, ताकि समाज में लिखित तौर पर जाति–पाति फैलाने का उनका घुन्नापन ढंका रहे और खाप उनके फैलाये इस जहर को हजम करने हेतु सॉट–टारगेट बानी रहें) परन्तु जाति–पाति को लिखित तौर पर बनाने वाले समुदायों से आने वाले न्यायपालिका में भी इसको कायम रखना चाहते हैं और इस मार्ग में वो खाप जैसी संस्थाओं को सबसे बड़ा रोड़ा पाते हैं इसीलिए एकमुश्त इन पर जहर उगलते और उगलवाते हैं। परन्तु यह उनसे ज्यादा खापों की नाकामी है जो ऐसे सॉट–टार्गेटों से बचने हेतु कोई भी शील्ड व कवच नहीं रखते या बनाते।

इसलिए अगर हमको हमारे लोकतंत्र की परिभाषा के अनुसार लोकतान्त्रिक न्याय चाहिए जो यह गुलामों वाली न्यायप्रणाली को बदल खाप पंचायतों जैसी व्यवस्था में जरूरी सुधार डाल इसको अमेरिका के पैटर्न पे जज–वकील व्यवस्था के साथ जोड़ना होगा। न्यायपालिका को न्याय करने वाली नहीं अपितु करवाने वाली बनना होगा।

सम्राट हर्षवर्धन सन् 606 ई0 से 647 ई0 तक

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

बैंस गोत्र वैदिक काल से ही प्रचलित है। महाभारत युद्ध में भी इसके वंशज लड़े थे। फगवाड़ा से सात मील दूर बैंसला गांव से हरियाणा और यू.पी. के बैंस जाटों का विकास माना गया है। लुधियाना की समराला तहसील मुस्काबाद, टपरियां, जांलन्धर से बैंसला व श्रीमालपुर बैंस गोत्र के जाटों का उद्भम स्थान माना गया है। यहां से 'पुष्पभूति' नामक इस गोत्र का जाट अपने हजारों साथियों सहित कुरूक्षेत्र के पास थानेसर नगर बसा कर इसके चारो तरफ कब्जा करके यहां का राजा बन गया। गुड़गांव में दयालपुर, हिसार में खेहर, लाथल, मेरठ में बहलोलपुर, विगास, गवांदा और बुलन्दपुर शहर में सलेमपुर गांव में बैंस गोत्र के जाटों के आज भी गांव हैं। पुष्पभूति के मरणोन्परात इसका पुत्र नरवर्धन 505 ई० में राजा बन गया। इनके बाद इनका पुत्र आदित्य सैन सिंहासन पर बैठा। इसकी महारानी महासेन गुप्ता नामक गुप्त वंश धारणगोत्री जाट राजा की राजकुमारी थी। जिनसे सम्राट प्रभाकर वर्धन का जन्म हुआ। प्रभाकरवर्धन इस वंश का पहला शक्तिशाली राजा सिद्ध हुआ। इसकी शक्ति से (राजकवि वाणभट्ट द्वारा लेख) हुण, सिन्धुदेश, गुजर, गंधार, गुजरात व मालवा के शासक खौफ खाते थे।

प्रभाकरवर्धन की रानी यशोमति से राज्यवर्धन पैदा हुआ। उसके चार वर्ष बाद पुत्री राजेश्वरी (राजश्री) और उसके दो वर्ष बाद 590 ई० में हर्षवर्धन ने जन्म लिया। सन् 605 ई० प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो गई तो राज्यवर्धन थानेसर का राजा बना। प्रभाकरवर्धन ने अपनी बेटी राजेश्वरी की शादी कन्नौज के राजा ग्रहवर्मा से की थी। मालवा देश का राजा देवगुप्त व बंगाल के राजा शशांकगुप्त ने कन्नौज पर हमला कर दिया। ये दोनों राजा धारण गोत्र के जाट राजा थे। इन्होंने ग्रहवर्मा को मार कर राजेश्वरी को कन्नौज में ही बन्दी बना लिया। राज्यवर्धन को इस घटना का पता लगते ही वह दस हजार सैनिकों के साथ कन्नौज गया और लड़ाई में मालवा का राजा देवगुप्त मारा गया और बंगाल पर चढ़ाई की तो शशांकगुप्त ने सन्धि का आश्वासन देकर और अपनी पुत्री का राज्यवर्धन से विवाह करने का आश्वासन देकर अपने महल में ठहराकर रात को धोखे से राज्यवर्धन का कत्ल कर दिया। जब इस समाचार का पता हर्षवर्धन को मिला उस समय हर्षवर्धन की 16 वर्ष की आयु थी। हर्षवर्धन ने 606 ई० में सबसे पहले बंगाल पर चढ़ाई की और शशांकगुप्त को मारकर बंगाल को अपने राज्य में मिला लिया। फिर राजेश्वरी को ढूंढ़कर अपने घर ले आया। कन्नौज को भी अपने राज्य में मिला लिया गया और थानेश्वर की जगह कन्नौज को अपनी राजधानी बना लिया।

हर्षवर्धन की विजयें :–

1. हर्षवर्धन ने 606 ई० से 612 ई० तक पंजाब, बिहार, बंगाल, उड़ीसा को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया।
2. गुजरात के बलभी/बाल्याण गोत्र के जाट राजा को हराकर उसका राज्य सन्धि उपरांत उसे ही सौंप दिया और मित्रता कर ली।
3. पुलकेशिन द्वितीय (अहलावत) से युद्ध में हार। चीनी यात्री हुंवानसांग लिखता है कि इस युद्ध में नर्मदा नदी के तट पर 620 ई० में हर्षवर्धन को अहलावतों ने करारी हार दी।
4. हर्षवर्धन ने सिन्ध, कश्मीर, नेपाल, कामरूप (आसाम) और गंजूम आदि प्रदेशों पर भी विजय पाई और पूरे उतर भारत का राजा बन गया था। हर्षवर्धन एक सफल विजेता ही नहीं बल्कि कुशल राजनितीज्ञ भी था।

हुवानसांग चीनी यात्री हर्षवर्धन के समय में 15 वर्षों तक भारत में रहा। 8 वर्षो तक हर्षवर्धन के साथ रहा। उसके द्वारा लिखी "सी.यू.की" नामक पुस्तक हर्षवर्धन के राज्यकाल को जानने हेतू काफी थी। हर्षवर्धन एक धार्मिक, साम्राज्य निर्माता, सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक, महान दानी, विद्वान, दयावान व कुशल साहित्यकार था। उसने चीन व फारस से अपने संबंध स्थापित किये। उसकी तुलना महान सम्राट अशोक व समुन्द्र गुप्त से की जाती है। हर्षवर्धन पहले शिवजी का उपासक था बाद में बौद्ध धर्म का उपासक बन गया था। हर 5 वर्षों में प्रयागराज में बौद्धों की एक सभा बुलाता था। 643 ई० मे जो सभा बुलाई उसमें 5 लाख लोगों और 20 राजाओं ने इसमें भाग लिया था। जिसमें जैन, बौद्ध और ब्राह्मण आदि सभी धर्मो के लोग थे। डॉ० आर. के. मुखर्जी ने हुवानसांग के बारे में बताया है।

सम्राट हर्षवर्धन ने पंचायत प्रणाली का गठन किया। उसके द्वारा 643 ई० में अपने राज्य में खाप पंचायतों का गठन भी किया और जोकि सर्वखाप पंचायत के अधीन किया गया था। सर्वखाप पंचायत का मुख्यालय गांव सोरम, जिला मुज्जफर नगर में बनाया। 647 ई० में 57 वर्ष की आयु मे हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई थी। युधिष्टिर से लेकर सम्राट हर्षवर्धन तक जाटों के भारतवर्ष में शक्तिशाली सम्राटों के राज्य रहते आये है। जिनका समय 3100 वर्ष हैं। ईसापूर्व के बाद 647 ई० तक 3747 वर्ष होते है। परन्तु मौर्य वंश(मोरवंश) साम्राज्य के बाद शुंगवंश के ब्राह्मणों का 112 वर्षों तक राज रहा। फिर उसके बाद कण्ववंश के ब्राह्मणों

ने 45 वर्ष तक राज किया। इस तरह से 185 ई.पू. में ब्राह्मणों ने मौर्य/मोर वंश के आखरी जाट सम्राट वृहद्रथ को धोखे से मारकर मगध का राज छिना था। इस तरह 157 वर्ष घटाकर देखें तो 3590 वर्ष तक भारतवर्ष पर जाटों का शासन रहा है। इस समय अनेक शक्तिशाली राज वंश हुये है जिन्होंने हमेशा प्रजा की भलाई के काम किये और ये सभी जाटवंश बड़े शक्तिशाली हुये है। इन जाटवंशों के राज्यकाल में गुप्तवंश के राजाओं के समय को भारतवर्ष को "सोने की चिड़ियां" कहा जाता था। प्राचीन भारत का इतिहास पेज 585 से 600, लेखक डॉ. बी.डी. महाजन, जाट वीरों का इतिहास पेज 505 से 510, लेखक कैप्टन दलिप सिंह अहलावत। लेखक भी इससे सहमत है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 1995) MBBS., Doing M. D. Father was Air Force officer. Mother Haryana Government employee. Family settled at Panchkula. One brother married and employed in IT Co. Avoid Gotras: Nain, Malik. Cont.: 9876633101
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09. 95) 27/5'5" B.Sc. Nursing, M.A. Preparing for UPSC. Employed as Nursing Officer n PGI Chandigarh. Father retired Government employee. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Kaliraman, Jani, Pawar. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 26.01.2001) 23/5'5" B.A., ITI (Steno English). Pursuing M.A. Willing to go Abroad. Father in Haryana Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Dhull, Tomar, Khatri. Cont.: 7988991837, 8178530356
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09.94) 28/5'6" BA, B.Ed., MA (History), NIT, CTET, PRT qualified. Father Superintendent in ULB at Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Girl (DOB 26.09.97) 25/5 feet. B.Sc., M.Sc. Microbiology from SRM University Sonepat. Working as Lecturer in Dental College, Derabssi (Punjab). Father ASI in Chandigarh Police. Family settled at Baltana (Punjab). Avoid Gotras: Rathi, Hooda, Mann. Cont.: 9814227637
- SM4 Jat Girl (DOB 28.01.96) 27/5'2" B.A., JBT. Employed in Centre Government U. T. Chandigarh on contract basis. Avoid Gotras: Nehra, Sangwan, Punia. Cont.: 9815219007
- SM4 Jat Girl (DOB 23.08.94) 28/5'2" LLB, LLM. Father employed in Government of India. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 7696046215
- SM4 Jat Girl (DOB Nov. 2001) 22/5'4" B.Sc. (Non-Medical). Doing B.Ed. Avoid Gotras: Mor, Ahlawat, Malik. Cont.: 9466086781
- SM4 Jat Girl (DOB 16.07. 96) 26/5'4" M.Com. from Punjab University Chandigarh B.Ed. from Kurukshetra University. Working in a reputed private Co. since five years with package Rs. 7 lakh PA. Big brother and sister-in-law Senior Manager in MNC Gurugram. Father businessman. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Preferred match from tri-city. Avoid Gotras: Malik, Kadyan, Narwal. Cont.: 9855555322
- SM4 Jat Girl (DOB 15. 12. 96) 26/5'7" B. Com (Hons.), LLB from P. U. Chandigarh. LLM from MDU Rohtak. Father (late) was Associate Professor in HAU. Hisar. Mother Professor & Head in a University. Brother Major, Army Medical Corps. Avoid Gotras: Phogat, Agre Chaudhary, Dabas. Cont.: 9416358793
- SM4 Jat Girl (DOB 16. 05. 96) 27/5'4" M.A. (Economics) from Punjab University. Now doing MBA in Canada. Avoid Gotras: Malik, Chahal. Cont.: 9466611197, 8307028023
- SM4 Jat Girl (DOB 17. 09. 95) 27/5'2" B.Sc. Medical, BPED., Master of Physical Education. Employed as Tgt. Physical Education in Army Public School. Father NB Subedar in Army. Family settled at Ambala Cantt. Avoid Gotras: Suhag, Phogat, Sheoran. Cont.: 9780826185
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.96) 26/5'5" B.Sc., M.Sc., (Physics). GATE, CSR, NET cleared. Father Advocate. Mother Government lecturer. Family settled at Kaithal. Avoid Gotras: Dhanda, Dhull, Phour. Cont.: 93154200001
- SM4 Jat Girl (DOB 14.03.96) 27/ M.Sc., (Physics). JRF, NET, CTET, HTET qualified. Father retired SDO. Mother Housewife. Family settled at DLF Panchkula. Avoid Gotras: Nain, Dhanda, Punia. Cont.: 9416121082
- SM4 Jat Girl (DOB 14.03.90) 33/5'6" 1st Post Graduation from reputed Research Institute in Paris, France. Now doing 2nd Post Graduation from TIFR, Mumbai. PhD. in Experimental High Energy Physics from P.U. Chandigarh. Avoid Gotras: Lohan, Dangi, Dhaka. Cont.: 9872222173
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.97) 25/5'1" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed in MNC Banglore with Rs. 12 lakh package PA. Father retired Class-1 officer from Haryana Government. Mother teacher in Haryana government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Dhankhar. Cont.: 9463962490
- SM4 Jat Girl 42/5'4" M.Sc. Government Lecturer at Rohtak. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat. Cont.: 8059220808
- SM4 Jat Girl (DOB February, 92) 31/5'3" M.A. Economics, B.Ed. Working as Teacher in private school. Father Inspector retired from Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944
- SM4 Jat Girl 27/5'2" B.Tech (Computer Science). Working as Senior Software Engineer in MNC Gurugram. Father working in Maruti Udyog Gurugram. Avoid Gotras: Kundu, Mann, Deswal. Cont.: 9911345305
- SM4 Jat Girl (DOB 05.01.98) 25/5'6" B. Sc, B.Ed. HTET, CTET qualified. Preparing for competitive exams. Employed as JBT teacher through SSA in Chandigarh. Father in Haryana Government. Mother housewife. Brother in Central Govt. Gotras: Kaliraman, Panghal, Punia. Cont.: 9992394448
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 31/5'4" B. A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Government Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Family settled in own house at Pinjore (Panchkula). Preferred match from tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Pursuing Ph.D from P. U. Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Girl (DOB 18. 08. 97) 25/5'7" M.Sc. (Zoology). NET, CTET Qualified. B.Ed. final year. Father in Government job. Avoid Gotras: Goyat, Tomar, Chahal. Cont.: 9992330980
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298

- SM4 Jat Boy (DOB 10.03.96) 27/5'10" Hotel Management. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 7696844991, 8872937444
- SM4 Jat Boy 27/6 feet. B. Tech. Working in private job with package Rs. 5 lakh. Father Ex-serviceman IAF. Mother housewife. Brother in Centre Government job. Family settled in Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Dahiya, Kalairaman, Behrman. Cont.: 7986151580
- SM4 Jat Boy (DOB 17.11.96) 26/5'9" B. Com. (H), M.Com. Business owner of Pharmaceuticals Co. in Rai Industrial Area. Earning 5 crore PA. Father property & financial consultant. Mother housewife. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Rathi, Narwal, Dahiya. Cont.: 9215642675
- SM4 Jat Boy (DOB 15.02.89) 34/6'1" M.A. English. Employed in Distt. Court Mohali as Ahlmad/Clerk on regular basis. Father Superintendent in ULB at Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Boy (DOB 01.10.99) 23/5'9" B.A. Pursuing LLB from P. U. Father ASI in Chandigarh Police. Mother Superintendent in Director Panchayat, Haryana. Avoid Gotras: Pannu, Saharan, Rathi. Cont.: 9463188730, 9463188275
- SM4 Jat Boy 28/5'8" B.Tech. (Petroleum Engineering) MBA, Oil & Gas Management. Working in MNC with package Rs. 18 lakh PA. Father retired from Indian Navy. Mother housewife. Match preferred from Tri-city. Family settled at Pinjore (Panchkula). Avoid Gotras: Chahal, Mann, Sheoran. Cont.: 8010985773
- SM4 divorced having nine year old son Jat Boy (DOB 27.11.88)) 34/5'9". Post Graduate Economics. Employed as Godown In-charge in Haryana State Warehousing Corporation. Salary Rs. 50000/-. Own house at Jind. Seven acre agriculture land at village. Avoid Gotras: Boora, Mor. Cont.: 9416131270
- SM4 Jat Boy (DOB 17.10.94)) 28/5'9". B. Tech. Electronic Engineering. MBA (HR Marketing). Employed as TITLE Programme Assistant Manager in (Dullberry Co. Bilaspur) Gurugram. Salary Rs. 5 lakh PA. Family settled at Rewari. Avoid Gotras: Dhillon, Sangwan, Suhag. Cont.: 9468057880
- SM4 Jat Boy (DOB 05. 09.96)) 26/5'10". B. Tech. IIT Delhi. Working as Software Engineer in Tokyo, Japan with a salary package of Rs. One crore per annum. Boy may relocate after marriage. One brother also Software Engineer. Father senior Government officer. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Cont.: 9876221778
- SM4 Jat Boy (DOB 01.07.94) 28/6'1" BA, LLB, (VIPS, IP University). LLM (Kurukshetra University). Advocate (Working under AOR in Supreme Court, Giving Judicial Exams). Father farmer, social worker. Mother housewife. Elder sister LELTS Trainer, Pursuing PhD. Avoid Gotras: Rana, Dahiya, Sehrawat. Cont.: 9136235051
- SM4 Jat Boy 28/5'11" Team leader in Mohali. Family settled at Zirakpur. (Punjab). Avoid Gotras: Naidu, Nain, Khatkar. Cont.: 9034837334, 9217126815.
- SM4 Jat Boy (DOB 24.05.97) 26/5'9" Bachelor of Engineering in Electronic and Control. Canada PR. Avoid Gotras: Malik, Chahal. Cont.: 9466611197, 8307028023
- SM4 Jat Boy (DOB 31.10.90) 32/6'1" M. Tech CAD/CAM). Employed as Tax Assistant in Custom & Excise Department, Salary Rs. 46K. Father retired from Irrigation Department. Mother in Health Department. Preferred match doing job in Tri-city. Avoid Gotras: Beniwal, Dhaka, Sundlia. Cont.: 9914073947
- SM4 Jat Boy 30/5'11" B. A. One year diploma in Computer Science. Business in Footwear. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Kharb, Ravish, Narwal. Cont.: 9815755546, 7508128129
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'4" Graduate. Employed in private job. Father retired from Government job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB March 93) 30/5'10" B. A. Handling sales at Philips. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944
- SM4 Jat Boy (DOB 28.02.96) 27/5'7" M.A. (Result awaited). Employed as DEO in M.C. Chandigarh. Salary above Rs. 25 thousand. Father working in M.C. Chandigarh. Mother teacher in private school. Avoid Gotras: Malik, Dahiya, Hooda. Cont.: 9876828176, 9872940624
- SM4 Jat Boy (DOB 27.01.90) 33/5'9" B.I.M (KUK), MBA (GJU), LLB from KUK. Legal practice in Punjab & Haryana High Court. Living in New Chandigarh (Omax). Father Advocate, Mother School Lecturer. 11 acre agriculture land. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Sindhu. Cont.: 9896016828, 9813144808
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 25/6 feet. B.Tech (Computer Science). MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software Pune (work from home) with package of Rs. 16 lakh+ PA. Father retired as Supervisor from HMT Pinjore. Mother housewife. Family settled in own house at Pinjore (Panchkula). Own Coaching Institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 27. 04. 89) 33/5'10" B. Tech in Bio-Medical Engineering. Currently working in a reputed Masters' Medical Company with package Rs. 27 lac PA. Father's own business of Medical equipments. Mother housewife. Avoid Gotras: Jattain, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.

जाट Just Attract Them (Jat)

- प्रो० डी.सी. सारण
ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया

हर काल और देश में सभ्यता की साक्षी रही जाट जाति अपनी साफ-सुथरी सोंच, सहकारिता की भावना और रक्षा स्वतन्त्र प्रवृति के कारण अपना एक अनुठा गौरवशाली इतिहास रखती है। श्रम को सदा अराध्य माना। वहीं शासन करने का भी शानदार अनुभव है। लेकिन जाट अपनी जाति के इतिहास का स्वर्णिम पन्ना, वह मानते है जिसमें जाटों ने आदमखोर शासकों की बेइन्साफी और गैर-बराबरी का सतत मुहंतौड़ जवाब दिया। जाति ने कभी बेईमान कलम के तथाकथित धनी, सामन्तों की जूटन पर पलने वाले इतिहास लेखकों का मुंह नही ताका। जाट जाति का अमिट इतिहास धरती माँ के कण-कण में समाया है। लगातार खेतों के मखमली पन्नों में लिपटा, सुलेमान, हिन्दूकुश, हिमालय और विध्याचंल के फ्रेम में मंढ़ा, जाट इतिहास विश्वव्यापी ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक संदर्भों द्वारा स्वयं सिद्ध है।

राजा महेन्द्र प्रताप स्वतंत्रता संग्राम के तथ्यों के आधार पर भारत रत्न के हकदार : मलिक

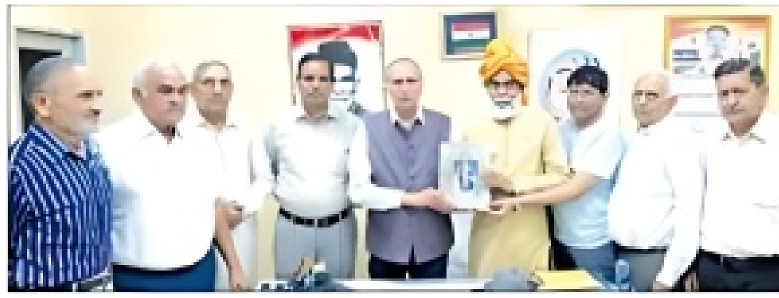

देश में फकीर से राजा तो अनेकों बने, लेकिन राजा से बने फकीर अकेले महान शिक्षाविद, क्रांतिकारी, समाजसेवी राजा महेंद्र प्रताप जो देश के इकलौते राजा थे। जिन्होंने अपनी अधिकतर भूमि, संपत्ति शिक्षक संस्थानों, किसानों को देकर स्वरोजगार और शिक्षा का उजियारा किया। वह इतने दूरदर्शी थे कि उन्होंने 1911 में वृंदावन के अपने महल में स्वरोजगार को शिक्षा के लिए आईटीआई आरंभ की थी। वह 1957 में मथुरा से लोकसभा के सांसद भी निर्वाचित हुए। निडर, निर्भीक, दूरदर्शी राजा महेंद्र प्रताप ने सर्वप्रथम 1915 में काबुल (अफगानिस्तान) में आजाद हिंद सरकार का गठन भी किया था।

देश को आजाद कराने के लिए 32 वर्ष विदेश में रहकर ब्रिटिश हुकूमत को भारत छोड़ने को मजबूर किया। वह महात्मा गांधी से पहले 1932 में नोबेल पुरस्कार के लिए नामित किए गए, उनके नाम से स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन को गौरवान्वित करने वाली इतिहास में अनेकों उपलब्धियां है। इसलिए राजा महेंद्र प्रताप भारत रत्न के हकदार हैं। जाट सभा चंडीगढ़ के अध्यक्ष डॉ महेंद्र सिंह मलिक सहित संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदाधिकारियों ने दिल्ली से आए राजा महेंद्र प्रताप अभियान के संयोजक चौधरी हरपाल सिंह राणा (पत्नी सीमा राणा सहित) जो कि राजा महेंद्र प्रताप को भारत रत्न दिलवाने के लिए वर्षों से प्रयासरत हैं को जाट सभा, चंडीगढ़ जाट सभा, पंचकूला और सेवा सदन कटरा–जम्मू की तरफ से राष्ट्रपति के नाम से राजा महेंद्र प्रताप को मिले। भारत रत्न के समर्थन में पत्र दिया। इस अवसर पर राणा ने महेंद्र सिंह मलिक को राजा महेंद्र प्रताप ग्रंथ भेंट किया। बता दें कि डॉ महेंद्र सिंह मलिक भारतीय ओलंपिक संघ के अलग–अलग समय पर महासचिव और भारतीय हॉकी फैडरेशन के अध्यक्ष भी रहे हैं। वह हरियाणा के डीजीपी भी रहे हैं और उन्होंने भारत में अनेकों महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया है। इस अवसर पर दिल्ली से आए सुरेंद्र काली रमन ने राजा महेंद्र प्रताप को भारत रत्न दिलवाने के लिए इसी प्रकार से अलग–अलग राज्यों में जाकर अधिक से अधिक समर्थन पत्र हासिल करके स्वतंत्रता दिवस पर भारत सरकार को दृढ़ता पूर्वक सौंपने की बात कही। इस अवसर पर संस्था के उपाध्यक्ष जयपाल पुनिया, बीएस गिल सचिव, राजेंद्र खराब, वित्त सचिव, एमएस फोगाट संयुक्त सचिव, एलएस फोगाट सदस्य कार्यकारिणी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

Proud Moments for Jat Sabha Chandigarh

Mr. KETAN DHILLON, working as Assistant Professor, Fashion Management in NIFT, Panchkula and life member of Jat Sabha, Chandigah / Panchkula has been awarded **First Place Best Poster** during HETL-2023, June 12-14,2023 hosted by **University of Aberdeen, Scotland**. Jat Sabha ,Chandigarh/Panchkula is pleased to congratulate him for his glorious and prestigious achievement and wish him all the best for his future Teaching and Research career in his esteemed organization of national repute NIFT, Panchkula.

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण शुरू हो चुका है जिस पर अभी तक 18 लाख रुपये खर्च हो चुका है और इस पर लगभग 40 लाख रुपये खर्च होगा। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है और यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया के निर्माण हेतु पी०डब्ल्यू०डी० (बी एण्ड आर) विभाग कटरा द्वारा 29 लाख की ग्रांट स्वीकृत हो चुकी है और इस वर्ष ग्रांट राशि जारी होते ही पुलिया का निर्माण हो जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम को विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राजपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तीन केंद्रीय मंत्री चौधरी सिंह केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के बदलुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला दान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि चार दिवारी पूरी होने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, **Email: jatbhawan6pkl@gmail.com**

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियेटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।